# प्रस्तावना

प्रिय छात्रावृन्द ! श्री तिलोकरत्न स्था० जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड पाथर्डी की विद्वत्परिषद् ने बोर्ड की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाली कन्याओं एवं महिलाओं के लिए प्रथम की तीन परीक्षाओं का एक स्वतन्त्र पाठ्यक्रम निर्धारित करना उचित समझ कर उसे तैयार करने के लिए वर्षों पूर्व एक उपसमिति बनाई थी। समिति के विद्वानों इस विषय में विचार-विनिमय करते हुये उपलब्ध साहित्य से संकलन करके उपयुक्त पुस्तकें तैयार करने का तै हुआ।

इस वर्ष श्रमण संघ के सुप्रसिद्ध सन्तों का एकत्र चातुर्मास जोधपुर में होने से सेवा में उपस्थित होने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ। संघ के प्रसिद्ध विद्वान् कविवर्य श्री अमरचन्दजी म० सा० द्वारा कुछ कन्या साहित्य पहले तैयार किया गया था, अतः उनकी सम्मति से बोर्ड की परीक्षाओं के लिए उपयुक्त ग्रन्थ तैयार करना उचित समझ कर उनकी सेवा में निवेदन किया, और उनके ही सुझाव के अनुसार इस पुस्तक की रूपरेखा तैयार की गई। संघ के प्रधान मन्त्री पंडित रत्न श्री आनन्द ऋषिजी म० और सहमन्त्री पं० रत्न श्री हस्तिमलजी म० सा० से भी परामर्श लेकर पुस्तक को तैयार कर लिया। तैयार पुस्तक को व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलालजी म० सा० ने पढ़कर पुस्तक अच्छी है, ऐसा अभिप्राय प्रकट किया। विद्वत्परिषद् के सदस्य

श्री चम्पालालजी कर्नावट बी० ए० एल० एल० बी० और पं० रोशनलालजी चपलोत बी० ए० एल० एल० बी० ने जोधपुर में और पं० शोभाचंदजी भारिल्ल न्यायतीर्थ, पं० धीरजलालजी तुरखिया तथा पं० शान्तिलालजी सेठ न्यायतीर्थ ने ब्यावर में इस पुस्तक को गौर से देखकर समाधान व्यक्त किया और कुछ पाठों में इन मित्रों की सलाह से परिवर्तन भी किया गया। भीलवाड़ा निवासी श्रीमान् दौलतसिंहजी लोढ़ा बी० ए० 'अरविन्द' ने ब्यावर में इसके पाठों का बारीकी से अध्ययन किया और कुछ नवीन कविताएँ तैयार करके इस पुस्तक में प्रकाशन करने को दीं।

इस प्रकार अनेक विद्वानों की सम्मतियाँ इस संकलन को तैयार करने में प्राप्त हुई हैं। इसके लिये मैं उन सभी पूज्य मुनिवृन्द का उपकार एवं मित्र विद्वानों का आभार मानता हूँ।

इस संकलन को तैयार करने में जिन २ पुस्तकों का आधार लिया गया है उन सब का विवरण विषय-सूची में दिया गया है। सभी पुस्तकों के सम्पादक एवं प्रकाशन संस्थाओं का हृदय से आभार मानता हूँ।

इस पुस्तक में प्रवेश परीक्षा के सामान्य दो पत्रों के साथ तीसरे विशिष्ट पत्र 'सामायिक सूत्र' को भी प्रकाशित कर दिया गया है। छात्राएँ इसका उचित लाभ उठायें यही शुभ कामना है।

बदरीनारायण शुक्ल

※ श्री वर्द्धमानाय नमः ※

# कन्या सुबोधिनी

---

## सुबोध पाठ १

## मंगल पाठ

---

अरिहन्त जय जय, सिद्ध प्रभु जय जय।
साधु जन जय जय, जिन धर्म जय जय ॥१॥
अरिहन्त मङ्गल, सिद्ध प्रभु मङ्गल।
साधु जन मङ्गल, जिन धर्म मङ्गल ॥२॥
अरिहन्त उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम।
साधु धर्म उत्तम, जिन धर्म उत्तम ॥३॥

अरिहन्त शरण, सिद्ध प्रभु शरण।
साधु जन शरण, जिन धर्म शरण ॥४॥
चार शरण अघ हरण जगत् में, और न शरणा हितकारी।
जो जन ग्रहण करें वे होते, अजर अमर पद के धारी ॥५॥

मङ्गलमय भगवान् वीर हैं, मङ्गलमय गौतम स्वामी।
मङ्गलमय है सदा अहिंसा, जैन धर्म जग में नामी ॥
हे प्रभु वीर दया के सागर, सब गुण आगर ज्ञान उजागर।
जबतक जीऊँ हँस-हँस जीऊँ, सत्य अहिंसा का रस पीऊँ ॥
छोड़ूँ, लोभ घमंड बुराई, चाहूँ सबकी नित्य भलाई।
जो करना सो अच्छा करना, फिर दुनिया में किससे डरना ॥
हे प्रभु, मेरा हो मन सुन्दर, वाणी सुन्दर जीवन सुन्दर ॥

---

## सुबोध पाठ २

# भगवान् का भजन

शरीर को स्वस्थ रखने के लिये जैसे प्रतिदिन खाना, काम करना, भ्रमण करना आदि आवश्यक हैं, वैसे ही मनको पवित्र तथा निर्मल रखने के लिये नित्यप्रति भगवान् का भजन करना भी अतीव आवश्यक है।

भगवान् का भजन करने से मन साफ होता है, मन साफ होने से उसमें अच्छे विचार पैदा होते हैं, अच्छे विचार पैदा होने से अच्छे काम होते हैं, अच्छे काम होने से संसार के अन्दर इज्जत मिलती है और साथ ही धर्म का लाभ होता है। भगवान् का भजन हमारी आत्मा को शुद्ध बनाता है।

यह एक अटल नियम है कि जो आदमी जैसा ध्यान करता है, वह वैसा ही बन जाता है। चोर का ध्यान करने से मनुष्य चोर बन जाता है और साहूकार का ध्यान करने से साहूकार। पापी का ध्यान आदमी को पापी बनाता है और धर्मात्मा का ध्यान धर्मात्मा। भगवान् का ध्यान भक्त को भगवान् बनाता है। मनुष्य के मन पर संकल्प का बड़ा प्रभाव पड़ता है।

संसार में जितने भी छोटे बड़े सभ्य मनुष्य हैं, सब भगवान् का नित्य भजन करते हैं। छोटे से छोटे और बड़े से बड़े प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह प्रातःकाल उठ कर सबसे पहले भगवान् का भजन करे, बाद में और कुछ करे।

जैन धर्म में सच्चे देव का बहुत महत्त्व है। वीतराग देव ही हमारे भगवान् हैं। वीतराग की उपासना साधक

को वीतराग बनाती है। वीतराग का अर्थ है—'राग और द्वेष से रहित होना।' जैनधर्म का नवकार मंत्र वीतराग भगवान् का भजन करने के लिये सबसे अच्छा मंत्र है। इस लिये प्रातःकाल उठ कर नवकार मंत्र का जप करना चाहिये। एक सौ आठ बार, अथवा कम से कम सत्ताईस बार। नवकार मन्त्र के जप के बाद कोई सरल-सा स्तोत्र बड़े मधुर कण्ठ से पढ़ना चाहिये जिससे तुम्हें भी आनन्द मिले और सुनने वालों को भी।

प्यारी पुत्रियों! भगवान् का भजन करना कभी भी मत भूलो। जब तक भगवान् का भजन न कर लो, तब तक कुछ न खाओ। बाहर के खाने की अपेक्षा यह अपनी आत्मा के लिये अन्दर की खुराक बहुत जरूरी है।

## अभ्यास

१—भगवान् के भजन से क्या लाभ है ?
२—भगवान के सम्बन्ध में क्या समझती हो ?
३—जैन धर्म में पूज्य देव कौन होते हैं ?
४—वीतराग का क्या अर्थ है ?

## सुबोध पाठ ३

# पढ़ना क्यों चाहिये ?

---

अध्यापिका—प्यारी पुत्रियों ! आज मैं तुम्हें एक बहुत सुन्दर बात बताती हूँ। तुम अभी बच्ची हो, अपने हित और अहित की बात अच्छी तरह नहीं समझ सकती हो। परन्तु सदा बच्ची ही तो न रहोगी ? तुम्हें अपने भविष्य को शानदार तथा सुखमय बनाने के लिये अभी से प्रयत्न करना चाहिये। अगर अभी से तुमने इस ओर ध्यान न दिया तो तुम्हें पछताना पड़ेगा।

हाँ तो अपने भविष्य को शानदार तथा सुखमय बनाने का क्या साधन है ? वह साधन और कुछ नहीं, अध्ययन है—पढ़ना है। भविष्य में यह व्यर्थ का खेलना-कूदना, लड़ना-झगड़ना, खाना-पीना, सुन्दर-सुन्दर ओढ़ना-पहनना, कुछ काम न आयेगा। जब भविष्य में तुम्हें सुख-सुविधा की जरूरत होगी, सम्मान और आदर की अपेक्षा होगी, प्रेम और स्नेह की आवश्यकता होगी, तब ये सब कौड़ियाँ खेलने, तास खेलने या गुड़ियाँ खेलने से मिलेंगे ? नहीं, इन से कुछ नहीं मिलेगा। याद रखो, ये सब मन [illegible] करने से ही मिलेंगे।

तुम अभी पढ़ने का मूल्य नहीं समझती। [illegible]
तुम्हारा पढ़ने को जी नहीं चाहता। परन्तु जब तुम पढ़ने
का मूल्य समझा करोगी, तब तुम्हें पता चल पड़ेगा कि
पढ़ने में सुस्ती करके हमने भारी भूल की है। जो लड़
कियाँ अब नहीं पढ़ती हैं, वे आगे बड़ी होने पर पछताया
करती हैं कि—हम पढ़ी होतीं तो आज सुन्दर सुन्दर
धार्मिक पुस्तकें पढ़ कर नित नया ज्ञान प्राप्त करतीं, हम
पढ़ी होतीं तो आज अपने पति या किसी और रिश्तेदार
की चिट्ठी दूसरों से क्यों पढ़ानी पड़ती, हम पढ़ी होतीं तो
दूसरों का भला करतीं, हम पढ़ी होतीं तो अपने माँ-बाप
और भाई बहनों की तथा पति और बच्चों की दशा सुधार
कर उन्हें अधिक सुखी बनातीं, और हम पढ़ी होतीं तो
हमारी आंखों में नया तेज आ जाता और अज्ञान का पर्दा
उठ जाता।

विद्या का स्थान संसार के सब पदार्थों में उत्तम और
श्रेष्ठ है। विद्या-धन का कभी नाश नहीं होता। दूसरों के
देने से यह घटती नहीं, वरन् बढ़ती ही जाती है। विद्या
वह गुप्त धन है जिसे न चोर चुरा सकता है और न राजा
छीन सकता है। विद्या से हीन मनुष्य की गिनती पशुओं
में की जाती है। जिस घर में विद्या का निवास है उस
घर में सदा सुख-शान्ति, सदाचार और धन-धान्य का

ਥास है। जहाँ इसका प्रकाश नहीं है, वहाँ सदा कलह ट और निरादर आदि दुर्गुणों का ही डेरा जमा रहता । भगवान् महावीर ने भी मानव जीवन में ज्ञान को ही हला स्थान दिया है। जैनधर्म मानता है—बिना ज्ञान के ान्ति नहीं।

यह याद रक्खो कि वही कन्या सुखी होगी, वही ाता पिता की दुलारी रहेगी, वही परिवार की प्यारी नेगी जो पढ़ी-लिखी है, बुद्धिमती है। कुल की शोभा भी सी ही कन्याओं से है। जो कन्या पढ़ी लिखी नहीं है, वह ले ही रूपवती हो, गहनों से लदी रहती हो, सुन्दर रेशमी पड़े पहनती हो, परन्तु अनपढ़ होने के कारण कहीं भी ादर नहीं पाती। उसका सभी जगह तिरस्कार और उप- ास होता है।

विद्या पढ़ने की यही अवस्था है। अगर अभी आल- स्य करोगी तो आगे इस का फल अच्छा नहीं रहेगा। अभी बचपन में तुम पर कोई घरके काम काज की फिकर हीं है, तुम्हारा मन भी साफ है, परिश्रम भी अच्छा हो कता है। आगे ज्यों-ज्यों आयु बड़ी होती जायगी, ज्यों- यों चिन्ता और जंजाल बढ़ता जायगा, त्यों-त्यों मन अस्थिर, चंचल और मैला होता जाय

विद्या प्राप्त करना कठिन हो जायगा। यही सुन्दर अवसर है, इससे लाभ उठाओ।

## अभ्यास

*१—पढ़ने से क्या लाभ है ?*

*२—बिना पढ़ी स्त्री कैसे पछताती है ?*

*३—कौनसी चीज है, जो देने से बढ़ती है ?*

*४—आदर किस चीज से मिलता है ?*

*५—बता दो, तुम क्या करोगी ?*

---

## सुबोध पाठ ४

# विद्या

जग जग जग विद्या महारानी,<br>
जग जग जग सब सुख की खानी।

तू है एक अनोखी माया, बड़भागों ने तुझको पाया।<br>
सभी धनों की तू है दाता, ज्ञान मान की तू है दाता<br>
जिसने जग में तुझको पाया, चतुर और विद्वान् कहाया।<br>
सबसे ऊँचा पद वह पाता, राजा भी सिर उसे नवाता<br>
चोर तुझको छीन सके ना, कोई तुझको बँटा सके ना।

ने से तू घट ना सकती, बाँटे से तू बँट ना सकती।
री करते सभी बड़ाई, इसी लिए तू मुझको भाई॥

---

## सुबोध पाठ ५

# बुद्धिमती रोहिणी

सेठ धन्नाजी के चार पुत्र थे। धनपाल, धनदेव, ानगोप और धनरक्षित। चारों भाइयों में बड़ा प्रेम था। ेठजी ने चारों के विवाह कर दिये थे। अपनी पुत्रवधुओं े भी सेठजी को सन्तोष था, लेकिन गृहरक्षा का भार केस वधू को सौंपा जाय, यह चिन्ता सेठजी को सताने लगी। सेठजी विचारवान् थे। उन्होंने अपनी पुत्र-वधुओं की जांच करने के लिये एक तरकीब सोची। समय देख कर एक दिन सेठजी ने अपने कुडम्ब के सभी लोगों को बुलाया। सबके सामने अपनी पुत्र-वधुओं को पाँच-पाँच शालि के दाने देते हुए कहा—लो, इन दानों को अपने ास सम्हाल कर रखना और जब कभी मैं मांगूँ, वापिस दे देना।

बड़ी पुत्रवधू ने विचारा, सेठजी बूढ़े हो गये हैं, इस लिये उनकी बुद्धि सठिया गई है। ये कोई सोने की मोहरें थोड़े ही हैं, जो सम्हाल कर रक्खूँ। घर में इतने

३—चारों बहुओं के नाम [illegible] ?
४—इस कहानी से तुमने कौनसा [illegible] ?
५—पूरी कहानी संक्षेप में कहो ?

---

सुबोध पाठ ६

## जैन

जैन कौन है ? जो मन के विकारों को जीतने
कोशिश करता है तथा जो सदा भले काम करता है ।

भले काम कौन से हैं ? १. सबके दुःख दूर करन
२. किसी को दुःख न देना । ३. सदा सत्य बोलन
४. चोरी न करना । ५. कभी गाली न देना । ६. दु
पड़ने पर न घबराना । ७. गरीब अन्धे को देख
हँसना । ८. सबके साथ अच्छा बर्ताव रखना ।

जैन को क्या करना चाहिये ? १. दोनों काल
यिक करना । २. नवकार मन्त्र का जप करना ।
पिता का आदर करना । ४. गुरु महाराज
करना । ५. नीति और धर्म की पुस्तकें पढ़ना
को भोजन देना । ७. रोगी की सेवा करना

## सुबोध पाठ ७

# नित्य कर्म

(१) सुशीला नित्य प्रातःकाल उठती है। भगवान् महावीर का नाम लेती है। तीन बार नवकार मन्त्र पढ़ती है, फिर माता-पिता को हाथ जोड़ कर जयजिनेन्द्र करती है और चरणों में झुक कर प्रणाम करती है।

(२) पहले वह मकान को झाड़-बुहार कर साफ करती है, फिर जिस-जिस काम के लिए उसकी माता कहती है वह सब काम बड़ी फुर्ती से कर लेती है।

(३) शुद्ध वस्त्र पहन कर अपनी माताजी के साथ सामायिक करने बैठती है। मन लगा कर नवकार मन्त्र की माला फेरती है। सामायिक करने के बाद अपनी पाठशाला का काम करती है और उस काम को पूरा करके भोजन बनाने में माताज़ी को सहायता देती है।

(४) वह नित्य समय पर पाठशाला पहुँच जाती है और वहाँ भलीभाँति मन लगा कर पढ़ती है।

(५) पाठशाला से छुट्टी मिलते ही सीधे घर जाती है तो झटपट पाठशाला के वस्त्र उतार कर दूसरे कपड़े पहन लेती है। घर के कामकाज में अपनी माँ का हाथ बँटाती है।

(६) पाठशाला की पढ़ाई को बार-बार दुहराती है छोटे बहिन-भाइयों को साफ-सुथरा रखती है और उन मीठी कहानियाँ सुनाती है।

(७) सोने से पहिले बहुत मीठे स्वर से तीन ब नवकार मन्त्र बोलती है और भगवान् महावीर की भ के गीत गाती है।

*अभ्यासः—सुयोग्य कन्या के नित्यकर्म क्या हैं ?*

---

### सुबोध पाठ ८

## अच्छी लड़की

अच्छी लड़की वही कहाती, नित्य सवेरे उठा करे।
करे काम जो सदा समय पर, प्रभु का सुमिरन किया करे॥
दया करे जो दीन-जनों पर, कभी न आलस किया करे।
कभी भूल कर झूठ न बोले, दुख न किसी को दिया करे॥
मात-पिता और सभी बड़ों की, मन से सेवा किया करे।
प्रेम बढ़ावे सभी जनों से, गुरु की आज्ञा किया करे॥
बैठ कर एकान्त जगह में, सदा पाठ निज पढ़ा करे।
नहीं किसी की पुस्तक लेवे, नहीं किसी से लड़ा करे॥
डरे कभी न किसी तरह भी, सब से मन से प्रेम करे।
थोड़ा बोले मीठा बोले, धर्म कर्म का नेम करे॥

## सुबोध पाठ ६

# धर्म

आजकल धर्म के सम्बन्ध में बड़ा गड़बड़झाला है। हर एक पंथ और हर एक आदमी अपना अलग-अलग धर्म बतलाता है। सब ओर अपनी २ डफली और अपना-अपना राग है। कोई किसी काम को धर्म बतलाता है तो कोई किसी काम को। कुछ लोग कहते हैं:—

"गंगा-जमुना में नहाना धर्म है। जाति-बिरादरी जिमाना धर्म है। तिलक आदि लगाना धर्म है। हवन यज्ञ करना धर्म है। मन्दिर-मस्जिद बनाना धर्म है।"

सच्चा धर्म क्या है? यह अभी बहुत कम लोग जानते हैं। भगवान् महावीर ने कहा है:—

"ज्ञान का पढ़ना धर्म है। जीवों पर दया करना धर्म है। सच बोलना धर्म है। चोरी न करना धर्म है। लालच न रखना धर्म है। दुःखी की सेवा करना धर्म है। गुस्सा न करना धर्म है। अहंकार न करना धर्म है। गाली न देना धर्म है। सबसे प्रेम रखना धर्म है।"

क्या तुम्हें एक ही बोल में धर्म का मर्म समझना है? अगर समझना है, तो लो बताऊँ।

याद रखना। भूल न जाना। जिस काम से अपना भला हो वह धर्म है। अपना भला कैसे हो ? 'दूसरों का भला करने से।' जैन धर्म का निचोड़ दूसरों की भलाई है:—

"भलाई कर चलो जग में, तुम्हारा भी भला होगा।
वही है जैन सच्चा जो, भलाई में ढला होगा॥"
"खुश रहना खुश रखना, जीना और जिलाना
सदा जैन के मुख पर, बस एक यही हो गाना॥"

## अभ्यास

*१—दूसरे लोग धर्म किन कामों में बताते हैं ?*
*२—भगवान् महावीर ने धर्म किस काम में बताया है ?*
*३—गरीबों की सेवा करना पाप है या धर्म ?*
*४—विद्या पढ़ना, सच बोलना क्या है ?*
*५—एक बोल में धर्म का स्वरूप क्या है ?*

---

### सुबोध पाठ १०

## धर्मस्थान में क्या नहीं करना

### [जैन माता का कन्याओं को उपदेश]

स्थानक हम जैनों का एक बहुत ही पवित्र धर्मस्थान है। वहाँ हम लोग सामायिक संवर आदि धर्म ध्यान

करती हैं और शुद्ध मन से भगवान् का भजन करती हैं। जब कभी गुरुदेव या गुरुणी जी महाराज—पधारते हैं तब वहाँ उनके दर्शन करती हैं और व्याख्यान सुनती हैं।

अपने धर्मस्थान की मान-मर्यादा का ध्यान रखना हमारा मुख्य कर्त्तव्य है। यदि हम लोग ही अपने धर्म-स्थान का गौरव न रखेंगी तो फिर दूसरा कौन रखेगा। इस लिये स्थानक में जाकर इन बातों का जरूर खयाल रखना चाहिये।

१—जूते-चप्पल अन्दर नहीं ले जाना।
२—फलफूल सब्जी वगैरह भी पास नहीं रखना।
३—रेशम के बने हुये अपवित्र वस्त्र नहीं पहनने।
४—स्वच्छ और सादे वस्त्र पहन कर जाना।
५—पान सुपारी आदि नहीं चबाना।
६—इधर उधर हर जगह नहीं थूकना।
७—तास चौपड़ आदि कोई खेल नहीं खेलना।
८—आपस में लड़ना झगड़ना नहीं। निन्दा, विकथा और घर की बातें करनी नहीं।
९—किसी को अपशब्द नहीं बोलना। क्रोध नहीं करना।
१०—झूठ नहीं बोलना।
११—सिनेमा आदि के गाने नहीं गाने।

१२—धर्म पुस्तकों को लापरवाही से नहीं डालना।
१३—गुरुदेव के आसन को पैर नहीं लगाना।
१४—गुरुदेव की ओर पीठ नहीं करना।
१५—व्याख्यान के समय आपस में बात नहीं करना

## अभ्यास

*१—स्थानक किसे कहते हैं ?*
*२—स्थानक में तुम क्या करती हो ?*
*३—गुरुदेव कहाँ ठहरते हैं ?*
*४—स्थानक में क्या नहीं करना चाहिये ?*

---

## सुबोध पाठ ११

## नमस्कार महामंत्र (सार्थ)

णमो अरिहन्ताणं णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्व साहूणं

## नमस्कार का माहात्म्य

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

अर्थः—

णमो अरिहन्ताणं—अरिहन्त देवों को नमस्कार हो।
णमो सिद्धाणं—सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार हो।

णमो आयरियाणं—आचार्यों को नमस्कार हो।
णमो उवज्झायाणं—उपाध्यायों को नमस्कार हो।
णमो लोए सव्वसाहूणं—लोकमें सब साधुओं को नमस्कार हो
एसो पंच णमोक्कारो—ये पाँच नमस्कार।
सव्व पावप्पणासणो—सब पापों का नाश करने वाले हैं।
मंगलाणं च सव्वेसिं—सभी मंगलों में।
पढमं हवइ मंगलं—प्रथम मंगल हैं।

इस नमस्कार मंत्र में अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु, इन पाँच पदों को नमस्कार किया गया है। इन पदों के गुण जिन आत्माओं में हों उन सबको नमस्कार इस महामन्त्र के द्वारा किया जाता है, यही इस मन्त्र की विशेषता है। इसी लिये यह सब मंगलों में उत्तम माना जाता है।

अरिहन्त :—राग-द्वेष रूपी शत्रु का नाश कर चार घनघाती कर्मों पर विजय प्राप्त करने वाले। तीर्थङ्कर देव तथा सामान्य केवली महाराज।

सिद्ध :—सम्पूर्ण कर्मों को जीत कर आत्म-सिद्धि को प्राप्त, मुक्त आत्माएँ।

आचार्य :—श्रमण (चतुर्विध) संघ के नायक। जो श्रेष्ठ श्रमण ज्ञान, दर्शन चारित्र तप और वीर्य रूप पाँच

आचारों का स्वयं पालन करते हैं तथा संघ के दूसरे श्रमणों से पालन करवाते हैं।

उपाध्याय:—आगम-शास्त्रों के पारगामी श्रमण। जो संघ के दूसरे श्रमणों को शास्त्र का शिक्षण देते हैं।

साधु:—आत्मसाधक। जो पाँच* महाव्रतों का पालन करते हैं। इन पाँच पदों को 'पंच परमेष्ठी' में कहते हैं। इनमें से अरिहन्त और सिद्ध हमारे देव हैं और आचार्य, उपाध्याय व साधु ये तीन हमारे गुरु हैं।

## अभ्यास

१—नमस्कार महामंत्र में किन पाँच पदों को नमस्कार किया गया है?

२—पाँचों पदों में देव कितने और गुरु कितने हैं?

३—अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और गुरु परिभाषाएँ बताइये।

४—इस नमस्कार महामंत्र की विशेषता क्या है?

## सुबोध पाठ १२

## गुरु वन्दन का पाठ (सार्थ)

[illegible]

* [illegible]

भी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने हमको ज्ञान दिया
, उज्ज्वल चारित्र का पाठ पढ़ाया है और परमात्मा के
पथ में हमारी श्रद्धा को दृढ़ किया है। इस प्रकार हमारे
ीवन को उन्नत बनाने के लिये गुरुजी महाराज ने सच्चे
ार्ग का उपदेश दिया है। इसलिये हमको सब प्रकार
उनकी भक्ति करनी चाहिये।

जैन सिद्धान्त में गुरुजी महाराज को वन्दन करने
; लिये बहुत ही सुन्दर पाठ बताया गया है—

'तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि
क्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जु-
ासामि मत्थएण वंदामि।'

इसका अर्थ कन्याओं के लिए इस प्रकार होगा—

हे गुरुजी महाराज! मैं आपको तीन वार (विधि
ग्नुसार) दक्षिण तरफ से प्रदक्षिणा करती हूँ, वन्दन करती
ूँ, नमस्कार करती हूं, सत्कार करती हूँ, सन्मान देती हूं
प्राप कल्याण रूप हैं, मंगलमय हैं, देव रूप हैं, ज्ञान
ःवरूप हैं, मैं आपकी सेवा करती हूं और मस्तक नमा कर
न्दन करती हूँ।

गुरुजी महाराज 'ज्ञान, दर्शन और चारित्र' इन तीन
त्नों के धारक होते हैं। इस लिये उनको ऊपर कहे हुये
ाठ को बोलते हुए तीन वार वन्दन किया जाता है।

[illegible]

## मंगल आचार

पूज्य जनों की सेवा करना, लघु जन से करना नित प्यार।
नीच जनों का संग न करना, है यह उत्तम मंगलाचार ॥१॥
मातपिता का आदर करना, रखना सब विधि शिष्टाचार।
चरणों में नित वन्दन करना, है यह उत्तम मंगलाचार ॥२॥
दान धर्म के प्रेमी बनना, रखना हर दम दिल उदार।
दीन दुःखी की पीड़ा हरना, है यह उत्तम मंगलाचार ॥३॥
मन, वाणी, तन को शुभ रखना, रखना सब सुन्दर व्यवहार।
लक्ष्य एक जिनपद का रखना, है यह उत्तम मंगलाचार ॥४॥
क्षमाशील मितभाषी बनना. वाणी में मधु का संचार।
अहंकार छल लोभ न करना, है यह उत्तम मंगलाचार॥५॥
सब जीवों पर निश दिन करना, अपनी ममता का विस्तार।
सत्य-शील पर अविचल रहना, है यह उत्तम मंगलाचार॥६॥
सीधा-सादा रहन-सहन हो, हो न कहीं भी जरा विकार।
रहे सदा जागृत मानवता, है यह उत्तम मंगलाचार ॥७॥

## सुबोध पाठ १४

## जीव और अजीव

सरला ! तुम्हारी माताजी जैनधर्म का पालन करती हैं न ?

जी हाँ, माता जी का जैन धर्म पर दृढ़ विश्वास है, और वे हमेशा जैन धर्म का पालन करती हैं ।

जब कभी तुम माता जी के पास बैठती हो और वे तुम्हें हित की बात बताती हैं तब जैन धर्म की किस शिक्षा पर अधिक जोर देती हैं ?

माताजी बहुत अधिक दयालु हैं । मैं जब भी उनके पास बैठती हूं, तब हमेशा मुझे यही शिक्षा देती हैं कि बेटी, किसी भी जीव को मत सताना । सभी जीवों को हमारे समान ही दुःख होता है । जब हमें दुःख पसन्द नहीं है तब दूसरे जीवों को दुःख कैसे पसन्द आयगा ?

तुम्हारी माताजी तो बहुत ही दयालु और कोमल स्वभाव की हैं । तुम्हारा बहुत ही बड़ा अच्छा भाग्य था, जो तुम्हें ऐसी दयालु और नेक माता मिली । पर हाँ, यह तो बताओ कि जीव किसे कहते हैं ? जब तक तुम जीव को अच्छी तरह न समझोगी, तब तक उसकी दया भी कैसे पालोगी ?

जीव किसे कहते हैं ? यह तो मुझे पता नहीं, [illegible]
ही बताएँ ।

बेटी, तुम बड़ी सयानी हो । आज तुम्हें जीव [illegible]
हैं और जीव से विपरीत अजीव किसे कहते हैं ?
अच्छी तरह समझाऊंगी । परन्तु पहले जरा अपनी दा[illegible]
और कलम को तो आवाज दो कि वे यहां आयें,
थोड़ा सा लिखना है ।

आप क्या बात करती हैं ? दावात और कलम
कान थोड़े ही हैं जो मेरी आवाज सुन लें और चली आ[illegible]
बिना पैरों के आ भी कैसे सकती हैं ?

अच्छा, दावात और कलम बिना कान की हैं, [illegible]
बिना सुन नहीं सकतीं और बिना पैर की हैं इसलिये [illegible]
भी नहीं सकतीं, इसी तरह आंख के बिना देख नहीं सक[illegible]
और नाक के बिना सूंघ भी नहीं सकतीं न ?

[illegible]

[illegible]

नहीं सकतीं, बिना नाक के सूंघ नहीं सकतीं तो
दो, परन्तु देखो वह सामने आले में रबड़ का बना
लल्लुआ खड़ा है उसे ही आवाज दो, वह दावात
कलम दे जायगा।

'आज आप कैसी बातें कर रही हैं? वह तो
लौना है, भला कैसे सुन सकता है और आ सकता है?
बेटी सरला, अब तुम मुझे धोखा नहीं दे सकती।
लौना हुआ तो क्या है? जब इसके कान मौजूद हैं,
सुन क्यों नहीं सकता? क्या बहरा हो गया है? और
पैर मौजूद हैं तब चल क्यों नहीं सकता? क्या पैरों
दर्द है?

अजी कान हैं तो क्या हुआ? बनावटी कानों से
सुना थोड़े ही जाता है? पैर भी बनावटी हैं इसलिये
उनसे चला फिरा भी नहीं जा सकता। बहरेपन की और
दर्द की बात नहीं है।

बेटी, यह लो बर्फी लल्लुवा को खिला दो, उसे भूख
लग रही होगी? बिचारा कब से चुपचाप खड़ा है।

'यह खा भी नहीं

'मुँह तो है, फिर

'यह मुँह

बनावटी मुँह से

तुम्हारे कहने के अनुसार तो फिर वह सूंघ भी नहीं सकता ? नाक भी तो बनावटी ही है ?

'जी हाँ, नाक बनावटी है, इसीलिये यह फूल वगैरा सूंघ भी नहीं सकता।'

'मेरी प्यारी पुत्री, तुम तो अब बहुत होशियार हो गई हो। कितनी सुन्दर बातें कर रही हो। तुम्हारी बात मैंने मान ली। बनावटी कान से सुना नहीं जा सकता, बनावटी आँख से देखा नहीं जा सकता, बनावटी नाक से सूंघा भी नहीं जा सकता, बनावटी मुँह से खाया नहीं जा सकता और बनावटी पैरों से चला फिरा भी नहीं जा सकता। क्यों ठीक है न ?'

'जी हाँ, बिल्कुल ठीक है।'

'अच्छा यह बतलाओ—तुमने कभी कोई मरा हुआ बिल्ली का बच्चा या मरा हुआ कुत्ते का पिल्ला देखा है ?'

हाँ, देखा है।

"वह तो सुन सकता होगा, देख सकता होगा ? चल फिर सकता होगा और खा पी भी सकता होगा ?"

'भला कहीं मुर्दा भी ऐसा कर सकता है ? मुर्दा न सुन सकता है, न देख सकता है, न चल फिर सकता है और न खा पी ही सकता है।'

क्यों नहीं कर सकता ? उसके तो आँख, कान, मुख आदि असली हैं, बनावटी नहीं हैं।'

'आँख कान आदि असली हैं, बनावटी नहीं हैं, आपकी यह बात ठीक है। परन्तु जो मुर्दा हो जाता है उसमें जान नहीं रहती, इसलिये वह आँख, कान आदि के होते हुए भी उनसे काम नहीं ले सकता। बेजान चीज़ जानदारों की तरह काम नहीं करती।'

'सरला, अबकी बार तूने पते की बात कही है। बेजान चीज जानदारों की तरह हरकत नहीं कर सकती, यह बात बिल्कुल सही है। बेटी, तब तो रबड़ का ललुवा भी बेजान होने से देखना सुनना आदि नहीं कर सकता। बनावटी और असली आँख, कान आदि का तो अब कोई प्रश्न ही नहीं रहा। और यही बात तुम्हारी दावात और कलम की बाबत में भी है। वे भी बेजान हैं इसलिए देख, सुन, चल-फिर नहीं सकतीं।'

'जी हाँ, आपका कहना बिल्कुल सही है। दावात, कलम, रबड़ का ललुवा, मरा हुआ बिल्ली का बच्चा आदि सब बेजान हैं, इसलिए देखना, सुनना आदि काम नहीं कर सकते।'

'बेटी, अब तुम अपने आप ही समझ गई हो।

देखो; जिनमें जान है, जो जानदार हैं, वे जीव कहलाते हैं। इसके विपरीत जिनमें जान नहीं है, जो जानदार नहीं हैं वे अजीव कहलाते हैं। जीव ही अपनी इच्छा से चल फिर सकता है, खा-पी सकता है, देख-सुन सकता है और रोना-हँसना, गर्मी-सर्दी जानना आदि कार्य जीव ही कर सकता है, अजीव नहीं कर सकता। जिसे सुख दुःख का ज्ञान है, जो अपने भले बुरे को जानता है वह जीव है, बाकी सब अजीव हैं। इसलिए तुम्हारी माताजी कहती हैं कि किसी जीव को मत सताओ, क्यों कि उसको दुख पहुँचेगा।

'आज आपने मुझ पर बड़ी दया की। जीव और अजीव का भेद अब मैं अच्छी तरह समझ गई हूँ।'

बेटी सरला, मुझे बड़ी खुशी है कि तुम जीव और अजीव के इस कठिन विषय को इतनी जल्दी समझ गई हो। अब याद रखना देखना कहीं भूल न जाना। क्या!

१—जिनमें ज्ञान हो, जानने और समझने की ताकत हो, जिन्हें सुख दुःख का अनुभव होता हो, उन्हें जीव कहते हैं। जैसे आदमी, घोड़ा, गाय, बिल्ली, कबूतर, मछली आदि।

२—जिनमें न ज्ञान हो, न समझने की ताकत हो, जिन्हें

सुख दुःख का अनुभव न होता हो उन्हें अजीव कहते हैं। जैसे दावात, कलम, मेज, कुर्सी, घड़ी, मोटर, आदि।

## अभ्यास

१—जीव किसे कहते हैं ?
२—अजीव किसे कहते हैं ?
३—गधा, घोड़ा, कबूतर जीव हैं या अजीव ?
४—कुर्सी मेज, स्लेट जीव हैं या अजीव ?
५—नीचे लिखे पदार्थों में से जीव और अजीव को अलग-अलग बताओ :—

कुत्ता, हिरन, ईंट, गधा, चौकी, पुस्तक, मनुष्य, तोता, बालक, घड़ी, गाय, मोटर, भैंस, मुर्गी, कलम, दावात, बिल्ली, हाथी।

## सुबोध पाठ १५
## धार्मिक प्रश्नोत्तर

[ एक बालिका का दूसरी जैन बालिका से प्रश्न ]

प्रश्न—तुम्हारा धर्म कौनसा है ?
उत्तर—जैन।
प्र०—तुम कौन हो ?
उ०—श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन।
प्र०—तुम्हारे गुरु कौन हैं ?

(आर्याजी म०)

प्र०—उनकी पहचान क्या है ?

उ०—उनके मुख पर एक वस्त्र की मुँहपत्ती बंधी हुई होती है, उनके पास जीव-रक्षा के लिये एक रजोहरण और एक पूंजनी होती है, भोजन करने के लिये उनके पास काठ के पात्र होते हैं, उनके वस्त्र सफेद होते हैं, कौड़ी पैसा नहीं रखते, पैदल ही चलते हैं, नंगे सिर और नंगे पांव रहते हैं, व्रतों का अच्छी तरह पालन करते हैं। उनके पाँच महाव्रत होते हैं।

प्र०—उनके पांच महाव्रत कौन २ से हैं ?

उ०—१. सभी जीवों पर दयाभाव रखना, २. कभी भी झूठ नहीं बोलना, ३. अनुमति लिये बिना किसी की कोई चीज नहीं लेना, ४. अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करना, ५. किसी भी प्रकार का परिग्रह (प्रपंच) नहीं रखना। ये पांच महाव्रत कहलाते हैं। गुरु-गुरुणीजी म० के तीन करण तीन योग से हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह इन पांचों का त्याग होता है। करना, कराना और अनुमोदन देना ये तीन करण कहलाते हैं और मन वचन काय (शरीर) की प्रवृत्तियों को योग कहते

प्र०—मुँहपत्ती को मुंह पर वे किस लिये बांधते हैं ?

उ०—यह उनका धर्मचिह्न है और जीव-रक्षा के भी बांधते हैं ।

प्र०—तुम्हारे गुरु आहार कहां से लाते हैं ?

उ०—वे अनेक घरों से निर्दोष भिक्षा (शास्त्र में ल विधि के अनुसार) मांग कर लाते हैं ।

प्र०—तुम्हारे गुरु तुमको क्या शिक्षा देते हैं ?

उ०—वे कहते हैं:—जूआ मत खेलो, शराब न लो, मांस न खाओ, शिकार न खेलो, गालियां न ो, चोरी न करो, झूठ मत बोलो, विद्याभ्यास करते ो, बड़ों का विनय करो, हर एक काम में विवेक रखो, बकी भलाई करो इत्यादि ।

प्र०—वे विराजते (रहते) कहाँ पर हैं ?

उ०—उनका कोई स्थान नियत नहीं रहता । किन्तु श्रावक श्राविकाओं के धर्मध्यान के लिये जो स्थान होता है उसी में उन की अनुमति लेकर उतरते हैं । उस धर्म स्थान को 'स्थानक' कहते हैं ।

प्र०—तुम स्थानक में जा कर क्या करती हो ?

उ०—पहले हम अपने गुरुओं को वन्दना-नमस्कार करती हैं, फिर सामायिक आदि करके आत्मविचार करती हैं ।

प्रश्न—[illegible]
कौन थे?

उत्तर—[illegible]

प्रश्न—तीर्थ किसे कहते हैं?

उत्तर—जो [illegible]

प्रश्न—तीर्थ कितने होते हैं?

उत्तर—तीर्थ चार हैं। साधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका।

प्रश्न—श्रावक श्राविका किसे कहते हैं?

उत्तर—जो जैन शास्त्रों को सुन कर श्रद्धा रखें।

प्रश्न—जीवों के कितने भेद हैं?

उत्तर—दो हैं, त्रस और स्थावर।

प्रश्न—त्रस किसे कहते हैं?

उत्तर—जो चलता, फिरता, बढ़ता, खाता, पीता हो, जैसे मक्खी, मच्छर, गाय, भैंस, मनुष्य आदि।

प्रश्न—स्थावर किसे कहते हैं?

उत्तर—एकेन्द्रिय जीव, जैसे मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु, वनस्पति।

अधर्मी किसे कहते हैं ?

उ०—जो सदाचार और दया से रहित हो (दुराचारी और निर्दयी)

प्र०—देव कितने प्रकार के हैं ?

उ०—चार प्रकार के हैं।

प्र०—वे कौन २ से हैं ?

उ०—भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक।

प्र०—स्थावर जीव कितने प्रकार के हैं ?

उ०—पाँच प्रकार के हैं।

प्र०—वे कौन २ से हैं ?

उ०—मिट्टी के जीव, पानी के जीव, अग्नि के जीव, वायु के जीव और वनस्पति के जीव।

प्र०—मिट्टी में, पानी में, अग्नि में, वायु में कितने २ जीव हैं ?

उ०—असंख्यात (जो गणना में न आ सकें)

प्र०—वनस्पति में कितने जीव हैं ?

उ०—अनन्त।

प्र०—वे जीव कौन से हैं जो न तो त्रस हैं और न स्थावर हैं ?

उ०—मुक्त आत्मा, सिद्ध भगवान्।

प्र०—उनके क्या २ नाम हैं ?

उ०—अजर, अमर, सिद्ध, बुद्ध, परमेश्वर, परमा-, सर्वज्ञ इत्यादि अनन्त नाम हैं।

प्र०—अजर, अमर आदि नाम जपने से हमको ा लाभ होता है ?

उ०—चित्त को शांति आती है, भाव शुद्ध हो जाते । जैसे अग्नि के पास बैठने से शीत दूर हो जाता है, ो ही भगवान् के जाप से पाप (दुःख) दूर हो जाते हैं।

---

## सुबोध पाठ १७

## ६३ श्लाघ्य पुरुषों के नाम

जैन ग्रन्थों में तीर्थङ्कर, चक्रवर्त्ती, बलदेव, वासुदेव ौर प्रतिवासुदेव को श्लाघ्य पुरुष कहा गया है।

## तीर्थङ्कर २४

भारतवर्ष में जैन धर्म का उपदेश देने वाले इ काल-चक्र में चौबीस तीर्थङ्कर हो चुके हैं। तीर्थ का अ संघ है। साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका को सं कहते हैं। इस प्रकार चार संघ की स्थापना करके वीतरा देव अरिहन्त भगवान् तीर्थङ्कर कहलाते हैं। तीर्थङ्कर या तीर्थ को करने वाले।

श्री श्रेयांसनाथजी    १८. श्री अरनाथजी
,, वासुपूज्यजी    १६. ,, मल्लिनाथजी
,, विमलनाथजी    २०. ,, मुनिसुव्रतजी
,, अनन्तनाथजी    २१. ,, नमिनाथजी
,, धर्मनाथजी    २२. ,, नेमिनाथजी
,, शान्तिनाथजी    २३. ,, पार्श्वनाथजी
,, कुन्थुनाथजी    २४. ,, महावीरस्वामीजी

भगवान् ऋषभदेवजी का दूसरा नाम आदिनाथजी इन्हें आदिदेव भी कहते हैं।

नौवें तीर्थङ्कर श्री सुविधिनाथजी का दूसरा नाम पुष्पदन्तजी है। इसी प्रकार बाईसवें तीर्थङ्कर श्री नेमि-जी का दूसरा नाम अरिष्टनेमिजी है।

चौबीसवें तीर्थङ्कर श्री भगवान् महावीरस्वामी के नाम हैं। उन्हें वीर, महावीर, अतिवीर, सन्मति और मान भी कहते हैं।

## चक्रवर्ती १२

चक्रवर्ती वे कहाते हैं जो सम्पूर्ण छः खण्ड पृथ्वी जीत कर राज्य करें और चौदह रत्न तथा नवनिधि के मी हों। इस अवसर्पिणीकाल में बारह चक्रवर्ती हुये, के नाम इस प्रकार हैं:—

| | |
|---|---|
| १. भरतजी | ७. अरनाथजी |
| २. सागरजी | ८. सुभूमजी |
| ३. माघवजी | ९. महापद्मजी |
| ४. सनत्कुमारजी | १०. हरिषेणजी |
| ५. शान्तिनाथजी | ११. जयसेनजी |
| ६. कुन्थुनाथजी | १२. ब्रह्मदत्तजी |

इनमें से पांचवें छठे और सातवें चक्रवर्ती ही सोलहवें, सत्तरहवें और अठारहवें तीर्थङ्कर हुये हैं।

इस अवसर्पिणीकाल में ९ बलदेव, ९ वासुदेव और ९ प्रतिवासुदेव हुए हैं। बलदेव और वासुदेव भाई होते हैं। वासुदेव प्रतिवासुदेव को मार कर तीन खण्ड पृथ्वी के अधिपति बनते हैं। वासुदेव के मृत्यु के बाद बलदेव भाई का मोह छोड़ कर मुनि बन जाते हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं:—

| ९ बलदेव | ९ वासुदेव | ९ प्रतिवासुदेव |
|---|---|---|
| १. अचलजी | १. त्रिपृष्टजी | १. सुग्रीवजी |
| २. विजयजी | २. द्विपृष्टजी | २. तारकजी |
| ३. भद्रजी | ३. स्वयंभूजी | ३. मेरकजी |
| ४. सुप्रभजी | ४. पुरुषोत्तमजी | ४. मधुकीटजी |
| ५. सुदर्शनजी | ५. पुरुषसिंहजी | ५. नसुम्भजी |

| | | |
|---|---|---|
| ६. आनन्दजी | ६. पुरुषपुँडरीकजी | ६. बलजी |
| ७. नन्दनजी | ७. दत्तजी | ७. प्रह्लादजी |
| ८. रामचन्द्रजी | ८. लक्ष्मणजी | ८. रावणजी |
| ९. बलभद्रजी | ९. कृष्णजी | ९. जरासंधजी |

## अभ्यास

१—तीर्थङ्कर किसे कहते हैं? और २४ तीर्थङ्कर कौन २ से हैं?

२—चक्रवर्ती किसे कहते हैं? कौन २ से तीर्थङ्कर चक्रवर्ती भी हुये हैं?

३—बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव के नाम बताओ।

---

## सुबोध पाठ १८

## विहरमान

विहरमान वे कहाते हैं जो इस समय तीर्थङ्कर हैं और महाविदेह क्षेत्र में विचर रहे हैं। इस भरत क्षेत्र के अन्दर वर्त्तमान में कोई भी तीर्थङ्कर महाराज विद्यमान नहीं होने से प्रथम विहरमान श्री सीमंधर स्वामीजी महाराज की आज्ञा लेकर प्रतिक्रमण आदि धार्मिक अनुष्ठान किये जाते हैं। विहरमान २० होते हैं, उनके शुभ नाम इस प्रकार हैं:—

सुमति—सती किसको कहते हैं ?

माता—जो स्त्री कष्ट आने पर भी अपने शील-धर्म नहीं छोड़ती है तथा अपने पतिदेव के सिवाय दूसरे पुरुषों को भाई और पिता के समान समझती हैं उन्हें सती कहते हैं।

सुमति—माताजी ? ऐसी सतियाँ कितनी हुई हैं ?

माता—सतियाँ तो कई हो चुकी हैं, लेकिन उनमें मुख्य सोलह की गणना की जाती है।

सुमति—वे कौन २ सी हैं, माताजी !

माता—१. श्री ब्राह्मीजी, २. श्री सुन्दरीजी, ३. श्री चन्दनबालाजी, ४. श्री राजीमतीजी, ५. श्री द्रौपदीजी, ६. श्री कौशल्याजी, ७. श्री मृगावतीजी, ८. श्री सुलसाजी, ९. श्री सीताजी, १०. श्री सुभद्राजी, ११. श्री शिवाजी, १२. श्री कुन्तीजी १३. श्री दमयन्तीजी, १४. श्री पुष्पचूलाजी, १५. श्री पद्मावतीजी, १६. श्री प्रभावतीजी।

सुमति—क्या चन्दनबालाजी बालब्रह्मचारिणी थीं ?

माता—हाँ, ब्राह्मी, सुन्दरी, चन्दनबाला और राजीमतीजी को छोड़ कर बाकी सब विवाहिता थीं। इन सभी सतियों का जीवन चरित्र तुमको दूसरी पुस्तक में अच्छी तरह बताया जायगा। इन सतियों ने कितना कष्ट

सहन कर अपने धर्म की रक्षा की ? इसे पढ़ कर तुम दं
रह जाओगी। तभी तो ये सतियाँ जग की पूजनीय
बन गईं। प्रति दिन सुबह इनका नाम लेने से मन पवि
होता है और अपना चारित्र-बल बढ़ता है।

## अभ्यास

*प्रश्न-१—सती किसे कहते हैं ?*
*२—सोलह सतियों के नाम बताओ।*
*३—कितनी सतियाँ अविवाहिता थी ?*

---

## सुबोध पाठ २०

## भगवान् पार्श्वनाथ

भगवान् पार्श्वनाथ का समय हठयोगी तापसों
समय था। उस समय भारत की जनता जड़ क्रियाक
में उलझ कर सत्य से भ्रष्ट हो गई थी। कुछ सा
अपने चारों ओर अग्नि जला कर तप करते थे। कुछ
की शाखा से पैर बांध कर औंधे मुँह लटके रहते थे।
काँटों पर सोते थे। कुछ सूखे पत्ते चबा कर ही जिन्द
बिता रहे थे। इसी युग में काशी के राजा अश्वसेन
यहाँ पौष बदि दशमी के दिन भगवान् पार्श्वनाथ
जन्म हुआ। भगवान् की माता का नाम वामा देवी था

एक बार काशी में गंगा के तट पर उस युग का प्रसिद्ध तपस्वी कमठ आया। वह रातदिन अपने चारों ओर अग्नि जलाकर तप किया करता था। हजारों नर-नारी कमठ के दर्शनों को उमड़े पड़ते थे। अपनी पूजा देखकर साधु को मिथ्या अहंकार हो गया था।

महारानी वामादेवी भी उसके दर्शनों को गई। राजकुमार पार्श्व भी साथ थे। राजकुमार को जनता की धर्म मूढ़ता पर बहुत दुःख हुआ। पार्श्व ने अपने ज्ञान नेत्र से देखा कि धूनी में एक लक्कड़ के अन्दर जो भीतर से खोखला है एक साँप जल रहा है। पार्श्वकुमार ने कहा—तपस्वी! तुम तो धर्म की जगह अधर्म कर रहे हो, देखो, धूनी में साँप जल रहा है।

घमंडी साधु यह शिक्षा कैसे ग्रहण करता? वह बहुत बिगड़ा और झट से उठ कर कुल्हाड़ी से जलता हुआ लक्कड़ फाड़ने लगा। सचमुच उसमें से बिलबिलाता हुआ अधजला साँप बाहर निकला। साधु की प्रतिष्ठा भङ्ग हो जाने से वह खिसियाना हो कर भाग गया। दयालु राजकुमार ने सांप को उपदेश दिया। नवकार मंत्र सुनाया जिसके प्रभाव से मरकर वह नाग धरणेन्द्र नागकुमार देवता हो गया।

एक बार काशीनरेश के मित्र राजा प्रसेनजित पर किसी विदेशी राजा ने चढ़ाई की। वह राजा प्रसेनजित की सर्व-

श्रेष्ठ सुन्दरी राजकुमारी प्रभावती से विवाह करना चाहता था। राजकुमारी इसके लिये तैयार न थी। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। शत्रु की सेना अधिक थी। फलतः राजा प्रसेनजित घबरा उठे। यह समाचार काशी पहुँचा और राजकुमार पार्श्व सेना लेकर पहुँच आये। शत्रु राजा परास्त हो गया। प्रभावती का विवाह पार्श्वकुमार से हुआ।

राजकुमार पार्श्व का मन संसार से उदासीन रहने लगा। देश की धार्मिक आचार-विचारकी दुरवस्था भी उनको असह्य हो गई। फलतः अपनी लाखों की संपत्ति गरीब जनता को अर्पण कर मुनि बन गये।

एक बार एक सूने जंगल में भगवान् पार्श्वनाथजी ध्यान लगाये खड़े थे, कि वह कमठ तपस्वी-जो मर कर अब मेघमाली देव बन गया था, आ पहुँचा। मूसलधार पानी बरसा कर भगवान् को कष्ट पहुँचाया। भगवान् अपने ध्यान में तल्लीन रहे जरा, भी नहीं डिगे। अन्त में श्री धरणेन्द्र ने आकर भगवान् की सेवा की। मेघमाली हार कर प्रभु के चरणों में आ गिरा, क्षमा मांगने लगा। प्रभु दयालु थे, क्षमा कर दिया।

भगवान ने निर्वाण साधना के बाद केवल ज्ञान प्राप्त किया और जनता के वास्तविक भगवान् हो गये। भगवान

प्रेम की मिसरी बोलो, जय जैन धर्म की बोलो॥
त्यागो वैर विरोध बुराई, करो सभी की सदा भलाई।
मन की घुंडी खोलो, जय जैन धर्म की बोलो॥
महावीर का नाम सुमरना, जीवन का पथ उज्ज्वल करना।
पाप कालिमा धोलो, जय जैन धर्म की बोलो॥
अनेकान्त की ज्योति जगाना, पक्ष-पात का भाव हटाना।
"अमर" सच्चाई तोलो, जय जैन धर्म की बोलो॥

•

## प्रवेश–प्रथम पत्र पूर्ण
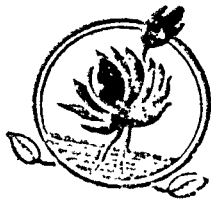
## प्रवेश द्वितीय पत्र

### सुबोध पाठ १

# मेरी भावना

जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह, चित्त उसी में लीन रहो॥१॥
विषयों की आशा नहीं जिनके, साम्य-भाव धन रखते हैं।
निज पर के हित साधन में जो, निश दिन तत्पर रहते हैं॥
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुख समूह को हरते हैं॥२॥
रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उनही जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे॥
नहीं सताऊँ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
पर-धन, पुरुषों पर न लुभाऊँ, संतोषामृत पिया करूँ॥३॥
अहंकार का भाव न रखूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्षा-भाव धरूँ॥

मन की घुंडी खोल ॥१॥
'अमर' दयामय धर्म की, रात दिवस जय बोल।
बिना दया का धर्म भी, धर्म नहीं है पोल ॥२॥

## अभ्यास

*१—हमें कोई दुख देता है तो कैसा लगता है ?*
*२—भगवान् महावीर का क्या उपदेश है ?*
*३—धर्म का मूल क्या है ?*
*४—जैनधर्म का दूसरा नाम क्या है ?*
*५—दया किसे कहते हैं ?*

---

### सुबोध पाठ ३

## राजा मेघरथ

बहुत पुराने जमाने की बात है, मेघरथ नाम के एक बड़े ही दयालु राजा थे। किसी भी दुःखी को देखकर उनका कोमल हृदय दया से भर आता था, वे दुःखी की सेवा करने में किसी प्रकार की कमी नहीं रखते थे। यहां तक कि सेवा और दया के मार्ग में वे अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हो जाते थे।

अच्छे लोगों का यश इस लोक में ही नहीं रहता, वह दूसरे लोकों में भी जा पहुँचता है। राजा का यश

किसी अन्य जीवित प्राणी का कबूतर जितना मांस दिला दीजिये। मुझे ताजा मांस चाहिए, बासी नहीं।

राजा ने कहा—'यह कैसे हो सकता है कि कबूतर को बचाऊँ और दूसरे किसी पंचेन्द्रिय जीव को मारूँ? और जो चाहो ले लो, मांस नहीं दे सकता। जानते हो किसी जीव को मारना और मांस खाना, कितना बुरा है? अगर मांस ही लेना है, तो मैं अपनी देह का मांस दे सकता हूँ।

बहेलिये ने कहा—'महाराज! यह क्या कहते हैं? जरा से कबूतर के लिये अपना मांस देना चाहते हैं? जरा विचार कर काम कीजिये।

राजा को मंत्रियों ने और प्रजा के लोगों ने भी बहुत समझाया। परन्तु वह दयावीर कब मानने वाला था? बहेलिया मांस की हठ लगाये रहा और राजा ने किसी दूसरे जीव का मांस न देना चाहा। कबूतर की रक्षा के लिये राजा अपने प्राणों पर खेलने लगा।

राजा ने झटपट तराजू मंगा ली। तराजू के एक पलड़े में कबूतर को बिठाया और दूसरे पलड़े में अपना मांस काट काट कर रखने लगा। पलड़ा मांस से भर गया किन्तु कबूतर के बराबर न हुआ। देवता की माया

अंधेरा था अच्छी तरह साफ नहीं दिखाई दे रहा था। नौकर से झटपट लालटेन पास ले आने को कहा।

नौकर जल्दी से लालटेन ले आया। लालटेन के उजाले में देखा तो एक दम हक्का-बक्का रह गया। उसके मुँह से अचानक चीख निकली—"अरे यह तो छिपकली है। बहुत बचा, नहीं तो आज मर गया होता।"

उस दिन से उसने रात में खाना छोड़ दिया। वह कहने लगा—"रात का खाना बहुत बुरा है। अब भूल कर के भी कभी रात में नहीं खाऊँगा।"

रात का खाना बहुत खराब है। जैन धर्म में इसे
बहुत बुरा बताया गया है। रात में उल्लू और
खाते हैं। हंस और तोता कभी भी रात
जो अच्छे और भले हैं वे रात को खाते
हैं। रात का खाना अंधा है। मक्खी, म
अनेक सूक्ष्म जीव खाने में पड़ जाते हैं।

आज के संसार में महात्मा गांधीजी
पुरुष हुये हैं। देखिये वे भी रात में नो
जैन धर्म का यह नियम धर्म और
दृष्टियों से मानने योग्य है।

## अभ्यास

१—यह घटना कहां और कैसे घटती है ?
२—जैनधर्म में रात्रि-भोजन को कैसा बताया है ?
३—रात में कौन पक्षी खाते हैं ? कौन नहीं ?
४—गांधीजी रात्रि-भोजन करते थे या नहीं ?

---

## सुबोध पाठ ६

# जैन धर्म और शुद्धि

जैन धर्म में शुद्धि का बहुत महत्त्व वर्णन किया गया है। वह जैन ही क्या जो शुद्धि का ध्यान नहीं रखता हो। तुम जानती हो, शुद्धि का क्या मतलब है? शुद्धि मतलब— 'शुद्ध रहना, साफ रहना, गंदा न रहना।'

जैन धर्म में शुद्धि दो तरह की बतलाई है—अन्तरंग और बहिरंग। अन्तरंग शुद्धि के लिये मन में किसी भी तरह के वैर, विरोध, डाह आदि के बुरे विचार व करो, मुँह से किसी को भी गाली न दो, और कड़वी बात मत कहो। शरीर से किसी को किसी भी तरह की चोट न पहुँचाओ। न किसी को मारो, पीटो और न किसी को चिढ़ाओ।

जैन धर्म में जिस प्रकार अन्तरंग शुद्धि पर जोर दिया उसी प्रकार बाहिरंग शुद्धि पर भी जोर दिया गया है

अंधेरा था अच्छी तरह साफ नहीं दिखाई दे रहा था। नौकर से झटपट लालटेन पास ले आने को कहा।

नौकर जल्दी से लालटेन ले आया। लालटेन के उजाले में देखा तो एक दम हक्का-बक्का रह गया। उसके मुँह से अचानक चीख निकली—"अरे यह तो छिपकली है। बहुत बचा, नहीं तो आज मर गया होता।"

उस दिन से उसने रात में खाना छोड़ दिया। वह कहने लगा—"रात का खाना बहुत बुरा है। अब भूल कर के भी कभी रात में नहीं खाऊँगा।"

रात का खाना बहुत खराब है। जैन धर्म में इसे बहुत बुरा बताया गया है। रात में उल्लू और चमगादड़ खाते हैं। हंस और तोता कभी भी रात को नहीं खाते। जो अच्छे और भले हैं वे रात को खाने से परहेज करते हैं। रात का खाना अंधा है। मक्खी, मच्छर, चींटी आदि अनेक सूक्ष्म जीव खाने में पड़ जाते हैं। कितनी हिंसा है?

आज के संसार में महात्मा गांधीजी सब से बड़े महा-पुरुष हुए हैं। इसलिए वे भी रात में भोजन नहीं करते थे। जैन धर्म का यह नियम धर्म और स्वास्थ्य दोनों ही दृष्टियों से मानने योग्य है।

## अभ्यास

१—यह घटना कहां और कैसे घटती है ?
२—जैनधर्म में रात्रि-भोजन को कैसा बताया है ?
३—रात में कौन पक्षी खाते हैं ? कौन नहीं ?
४—गांधीजी रात्रि-भोजन करते थे या नहीं ?

---

## सुबोध पाठ ६

# जैन धर्म और शुद्धि

जैन धर्म में शुद्धि का बहुत महत्त्व वर्णन किया गया है। वह जैन ही क्या जो शुद्धि का ध्यान नहीं रखता हो। तुम जानती हो, शुद्धि का क्या मतलब है? शुद्धि मतलब—'शुद्ध रहना, साफ रहना, गंदा न रहना।'

जैन धर्म में शुद्धि दो तरह की बतलाई है—अन्तरंग और बहिरंग। अन्तरंग शुद्धि के लिये मन में किसी भी तरह के वैर, विरोध, डाह आदि के बुरे विचार न करो, मुँह से किसी को भी गाली न दो, और कड़वी बात मत कहो। शरीर से किसी को किसी भी तरह की चोट न पहुँचाओ। न किसी को मारो, पीटो और न किसी को चिढ़ाओ।

जैन धर्म में जिस प्रकार अन्तरंग शुद्धि पर जोर दिया है उसी प्रकार बाहिरंग शुद्धि पर भी जोर दिया गया है।

बोलने वाले के मुख पर अपूर्व तेज चमकता है और आस-पास के सब लोगों में उसके प्रति विश्वास भी बढ़ता है।

प्यारी कन्याओ! तुम सदा सच बोला करो। जो लड़कियां झूठ बोलने वाली होती हैं उनका कोई विश्वास नहीं करता, सब लोग उनको घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

तुमने राजा हरिश्चन्द्र का नाम सुना होगा। वे महान् सत्यवादी थे। उन्होंने सत्य के सामने राज पाट की भी परवाह नहीं रक्खी, राजा रहने के बदले सेवक बनना स्वीकार किया, अपनी प्यारी रानी और इकलौते राजकुमार को भी कंटकमय पथ का पथिक बनाया, लेकिन सत्य से तिलमात्र भी विचलित होना स्वीकार नहीं किया। धन्य महाराज हरिश्चन्द्र की सत्यवादिता को।

चन्द्र टरै सुरज टरै, टरै जगतव्यवहार।<br>
पै दृढ़ व्रत हरिश्चन्द्र को टरै न सत्य विचार॥

आज महाराज हरिश्चन्द्र अपने भौतिक शरीर से हम लोगों के बीच नहीं हैं, परन्तु उनका यश रूपी शरीर इस संसार में स्थायी बन गया है।

## अभ्यास

१—सत्य किसे कहते हैं?<br>
२—सत्य बोलने से क्या लाभ है?

और गुरुजनों की आज्ञा का विनयपूर्वक पालन करते थे तो अन्त में दुर्जय शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर विश्व विख्यात महापुरुष हुये।

कन्याओ! तुमने विनय का फल पढ़ा है और अभि-मान का भी। अच्छा कौन है? विनय ही न? तो अपने अन्दर विनय गुण को खूब बढ़ावो। भारत में ऐसी बहुत सी देवियां हो चुकी हैं जिन्होंने अपने विनय और सतित्व के बल पर बड़ी बड़ी विरोधी शक्तियों को निष्फल बना दिया था। सीता, द्रौपदी, चन्दनबाला, दमयन्ती जैसी सतियां जितनी शीलव्रत के लिये प्रसिद्ध हैं, उतनी ही विनय के लिये भी।

विनय धर्मका मूल है, विनय ज्ञान का मूल।
सम्पत् सुख अरु गुरु कृपा, विनय बिना निर्मूल॥

## अभ्यास

१—विनय किसे कहते हैं?
२—विनय का फल क्या है?

---

## सुबोध पाठ १०

## विवेक

जैन धर्म में विवेक को बहुत बड़ा महत्त्व दिया गया है। विवेक धर्म का प्राण है। जहाँ विवेक रहता है वहीं

## सुबोध पाठ ९

# विनय

विनय धर्म का मूल है। विद्या विनय से ही आती है। विनयी संतान पर माता-पिता तथा अन्य स्त्री-पुरुष भी सदैव प्रसन्न रहते हैं।

बड़ों का मान रखना, उनकी आज्ञा का पालन करना, किसी की भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना विनय कहलाता है। परमात्मा का भजन करना, शास्त्र की आज्ञानुसार चलना, संघ, सभा, सोसाइटी आदि के नियमों का पालन करना, गुरुजनों की सेवा करना इत्यादि कार्य विनय से ही होते हैं।

विनय का अर्थ है नम्रता। नम्रता आत्मा का एक विशेष गुण है। जिसकी आत्मा में इस गुण का जितना अधिक विकास होगा उसका व्यक्तित्व उतना ही महान होगा और जिसमें नम्रता जितनी कम होगी उसमें उतना ही अधिक अभिमान का बोल-बाला होगा। अभिमान विनाश का मूल है और विनय विकास का। रावण अभिमानी था। अपने [illegible] किसी के अच्छे उपदेश को भी नहीं मानता था। तो अन्त में उसका विनाश हो गया। [illegible] विनयी थे। माता, पिता

और गुरुजनों की आज्ञा का विनयपूर्वक पालन करते थे तो अन्त में दुर्जेय शत्रु पर भी विजय प्राप्त कर विश्व विख्यात महापुरुष हुये।

कन्याओ! तुमने विनय का फल पढ़ा है और अभिमान का भी। अच्छा कौन है? विनय ही न? तो अपने अन्दर विनय गुण को खूब बढ़ाओ। भारत में ऐसी बहुत सी देवियां हो चुकी हैं जिन्होंने अपने विनय और सतित्व के बल पर बड़ी बड़ी विरोधी शक्तियों को निष्फल बना दिया था। सीता, द्रौपदी, चन्दनबाला, दमयन्ती जैसी सतियां जितनी शीलव्रत के लिये प्रसिद्ध हैं, उतनी ही विनय के लिये भी।

विनय धर्मका मूल है, विनय ज्ञान का मूल।
सम्पत् सुख अरु गुरु कृपा, विनय बिना निर्मूल॥

## अभ्यास

*१—विनय किसे कहते हैं?*
*२—विनय का फल क्या है?*

---

सुबोध पाठ १०

## विवेक

जैन धर्म में विवेक को बहुत बड़ा महत्त्व दिया गया है। विवेक धर्म का प्राण है। जहाँ विवेक रहता है वहाँ

जीवन में विवेक को जितना स्थान होगा उतना ही वह विकसित होगा।

## अभ्यास

*१—विवेक क्या है ? २—विवेक से लाभ क्या है ?*

---

## सुबोध पाठ ११

## मितव्ययता

यदि देखा जाय तो घर की वास्तविक स्वामिनी स्त्रियां ही हैं। गृहस्थी चलाने का भार अधिकतर स्त्रियों पर ही निर्भर रहता है। इसलिये प्रत्येक स्त्री का कर्त्तव्य है कि वह घर के हर एक खर्च से काट कसर करके धन बचाने का प्रयत्न करे। स्त्री चाहे तो घर को उजाड़ कर दे और चाहे तो उसे भरा-पूरा बना दे। यह उसके हाथ की साधारणसी बात है।

यदि स्त्री समझदार होगी, यदि निरर्थक खर्च करने का उसका स्वभाव नहीं होगा तो उसका संसार थोड़ी सी आमदनी में भी सुखी रहेगा। वह किसी भी चीज को व्यर्थ नष्ट न करेगी। अन्न का एक-एक दाना और वस्त्र का एक-एक धागा भी वह सावधानी से बचा कर काम में लायेगी। जैन धर्म में इसी को 'यतना' कहा है।

काट कसर के साथ जीवन-निर्वाह करने को मित
व्ययता कहते हैं।

बढ़े न व्यय निज आपसे, घटे न व्यय से आय।
मितव्ययता कहते इसे, 'कवि-दौलत' समुझाय॥

चतुर स्त्री जिस घर में रहती है, वहां दरिद्रता कभ
आ भी नहीं सकती क्योंकि ऐसी स्त्रियाँ घर की लक्ष्म
होती हैं। जहां लक्ष्मी का वास है वहाँ दरिद्रता का नाम
ही कैसा?

कुछ लड़कियों की ऐसी आदत होती है कि वे बाजा
में जिस किसी चीज को सुन्दर देखती हैं, उसे ही खरीद
लेने की आदी होती हैं। वे इस बात को सोचतीं तक
नहीं कि इस चीज की हमें जरूरत भी है या नहीं? उनको
यह मालूम होना चाहिये कि किसी भी चीज को खरी-
दने का कारण उसकी सुन्दरता नहीं, किन्तु उसकी
उपयोगिता और विशेष कर अपनी आवश्यकता होती है।
ऐसी आदतें फिजूल खर्च की मानी जाती हैं जो आगे
चल कर तंग करती रहती हैं।

भगवान् महावीर के समय में जैन श्रावक और
श्राविकाओं की गृहव्यवस्था बड़ी सुन्दर थी। वे लोग
उड़ाऊ आदत के गुलाम कतई नहीं थे। बहुत विचार-
पूर्वक गृहस्थ जीवन चलाते थे। वे अपने धन के चार

म आराम से अपना जीवन बिताने लगें। इसलिये प्यारी कन्याओ! तुम बचपन से ही खादी पहना करो जिससे तुम बड़ी होने पर अपने कुटुम्ब के लोगों पर भी अपना असर डाल सको, इसी में हमारे धर्म और देश की भलाई है।

---

## सुबोध पाठ १४
## पर–उपकार

पर-उपकारी व्यक्ति महान्।
तरुवर देता मीठी छाया, देता है फल मिष्ठ सवाया।
सुखदायी देता पवमान, नहीं मांगता मूल्य महान्॥
सरवर देता मीठा पानी, पीकर नहीं अघाते प्राणी।
आये का करता सम्मान, सेवा व्रत ही ध्यान महान्॥
सूर्य, चन्द्र और तारे चंचल, करते हैं जग का ही मंगल।
इसी तरह सब जड़ सज्ञान, जग का करते हैं कल्याण॥
मातायें हों पर-उपकारी, पिता सभी हों महोपकारी।
पर-उपकारी हों संतान, पर-उपकारी व्यक्ति महान्॥

## सुबोध पाठ १५
## एक उदार जैन महिला

यह कहानी खाली कहानी नहीं है। आठ सौ वर्ष

## सुबोध पाठ १३

# खादी

आज कल लड़कियों को महीन कपड़े पहनने का बड़ा शौक रहता है। लेकिन यह याद रखना चाहिये कि जो कपड़े महीन होते हैं और कल कारखानों में तैयार किये जाते हैं, उनमें चमकाहट और सफाई के लिये चर्बी लगाई जाती है। यह चर्बी हजारों गायें, भैंसें आदि पालतू जानवरों को मार कर तैयार की जाती है और फिर उन कपड़ों पर लगाई जाती है। ऐसे कपड़ों को पहनने में पाप होता है। रेशम के कपड़ों में तो और अधिक हिंसा होती है। वह तो कीड़ों को मार कर ही तैयार किया जाता है। इसलिये उसे तो छूना भी महापाप है। ऐसे महीन और चर्बी वाले वस्त्र पहनने से सारा शरीर नंगा दिखाई देता है कि शरीर पर कपड़ा ही न हो। इससे अधिकांश स्त्रियाँ लज्जा छोड़कर बेशर्म हो जाती हैं। इसलिये हमेशा खादी के सादे और मोटे कपड़े पहनना चाहिये। इससे लज्जा और धर्म दोनों की रक्षा होती है। खादी शरीर को ठंडी और गर्मी दोनों से बचाती है। वह गरीबों को रोटी देती है। अगर आज हमारे देश में तमाम लोग खादी पहनने लग जायें तो यहाँ का कोई भी आदमी भूख से नहीं मरे

आराम से अपना जीवन बिताने लगें। इसलिये प्यारी
न्याओ! तुम बचपन से ही खादी पहना करो जिससे
म बड़ी होने पर अपने कुटुम्ब के लोगों पर भी अपना
प्रसार डाल सको, इसी में हमारे धर्म और देश की भलाई है।

---

## सुबोध पाठ १४

## पर–उपकार

पर-उपकारी व्यक्ति महान्।

तरुवर देता मीठी छाया, देता है फल मिष्ठ सवाया।
सुखदायी देता पवमान, नहीं मांगता मूल्य महान्॥
र देता मीठा पानी, पीकर नहीं अघाते प्राणी।
ये का करता सम्मान, सेवा व्रत ही ध्यान महान्॥
र्य, चन्द्र और तारे चंचल, करते हैं जग का ही मंगल।
सी तरह सब जड़ सज्ञान, जग का करते हैं कल्याण॥
मातायें हों पर-उपकारी, पिता सभी हों सहोपकारी।
पर-उपकारी हों संतान, पर-उपकारी व्यक्ति महान्॥

## सुबोध पाठ १५

## एक उदार जैन महिला

यह कहानी खाली कहानी नहीं है। आठ सौ वर्ष

परदेशी की बात सुनकर लक्ष्मी तनिक विचार में पड़ गई और फिर बोली—

'तुम्हारा नाम क्या है भाई ?'

'ऊदा'

'कहाँ ठहरे हो ?'

'ठहरता कहाँ ? परदेशी आदमी ठहरा। मेरी समझ नहीं आता कि कहाँ जाऊँ ?'

'चिन्ता न करो भाई ! मेरे साथ चलो, तुम्हारा घर है, ने की क्या फिकर ? मैं कोई अमीरजादी तो नहीं, मुझसे जो बनेगी, सो रूखी-सूखी तुम्हें भी जरूर दूँगी।

ऊदा इस उदार और भली बहन की बातों को बड़े अच-के साथ सुनता रहा। जिस देश के लोग एक परदेशी लिये इतनी ममता दिखाते हैं, उस देश के लिये उसके में आदर पैदा होने लगा। उसने अपने भाग्य को ा कि जो उसे खींच कर गुजरात तक ले आया।

लक्ष्मी ने ऊदा और उसके बालबच्चों को भोजन या और फिर अपना एक खाली मकान उसे रहने के दे दिया। वहाँ रह कर ऊदा ने धीरे धीरे अपनी नत और होशियारी से कुछ धन संग्रह कर लिया और मी के जिस घर में वह रहता था, उसे गिराकर उसकी ह ईंटों का पक्का घर बनाने का विचार किया।

लक्ष्मी से पूछा तो उसने कहा—यह घर मैंने तुम्हें दे दिया। अब यह घर तुम्हारा है, जैसा चाहो बना लो।'

आखिर पुराना घर गिराया गया, और उसकी खोदी जाने लगी। उस नींव में से सोने की मुद्राओं से भरा एक गड़ा हुआ घड़ा निकला। अब यह प्रश्न उठा कि इस धन का मालिक कौन हो?

ऊदा ने सोचा—'घर लक्ष्मी का था। उसे क्या मालूम न होगा कि नींव में धन गड़ा है? जान पड़ता है, उसे कुछ मालूम नहीं है। अगर मालूम होता, तो वह जरूर इसे निकाल लेती। परन्तु कुछ भी हो, उसे मालूम हो, या न हो, इसका मालिक तो वही है। इसलिये मुझे तो यह धन उसी को दे देना चाहिये।'

यह सोचकर नींव में से मिले सारे धन के साथ ऊदा लक्ष्मी के पास पहुँचा। लक्ष्मी, लक्ष्मी ही थी उसने लेने से साफ इन्कार कर दिया और कहा—

'भाई, क्या पागल हो गये हो? घर मेरा कहाँ है, वह तो मैं तुम्हें दे चुकी थी। फिर अब धन से मुझे क्या मतलब? क्या मुझे पाप में डुबाना चाहते हो?'

बहुत आग्रह किया गया, परन्तु लक्ष्मी टस से मस न हुई। इसने इस धन को छुआ तक नहीं, धन का धन

ऊदा को ही लेना पड़ा। अब क्या था, उस धन के बल पर गरीब ऊदा, ऊदा न रह कर सेठ उदयन बन गया।

लक्ष्मी ! तुझे धन्य है। तूने कितना बड़ा उदार हृदय पाया था ? साधारण स्त्री होकर भी तूने लोभ न किया कि विदेशी को केवल अपने धर्म-प्रेम के नाते अपना घर दिया, और घर में से निकलने वाली सब संपत्ति भी अर्पण कर दी। जैन इतिहास की यह अमर कहानी विश्व को उदारता का पाठ पढ़ाने के लिये युग युग तक पर्याप्त रहेगी।

## अभ्यास

*१—यह कहानी कितनी प्राचीन है ?*
*२—लक्ष्मी ने कौनसा बड़ा काम किया ?*
*३—सारी कहानी जबानी सुनाओ।*

---

## सुबोध पाठ १६

# देश में ऐसी नारी हों

विश्व भरकी उपकारी हों, सत्यशील गुणधारी हों।
धर्म में रत अविकारी हों, दुखी के प्रति सुखकारी हों।
सदा सन्मार्ग विहारी हों, देश में ऐसी नारी हों॥ १॥
प्रेम की सरिता बहती हो, स्वार्थ की दाल न गलती हो।
राष्ट्र की दीप्ति दमकती हो, स्वर्ग की शुद्धि बरसती हो।
जगत में महिमाधारी हों, देश में ऐसी नारी हों॥ २॥

दिखादें बिजली का सा काम, न चाहें केवल अपना नाम।
कर्म में निरत रहे निष्काम, शील का ध्यान रखें अभिराम।
वीरगुणगरिमाधारी हों, देश में ऐसी नारी हों ॥ ३ ॥
बनावें आप भाग्य अपना, दिखा कर बल पौरुष अपना।
न देखें झूठा कुछ सपना, कर्ममय होय सदा तृष्णा।
सत्य पर नित्य बलहारी हों, देश में ऐसी नारी हों ॥ ४
दुखों के सह लेवें जो शूल, न घबरावें निज पथ को भूल।
कर्म पर आप चढ़ावें फूल, सिखादें जग को इसका मूल।
देश की, कुल की प्यारी हों, देश में ऐसी नारी हों ॥ ५॥

---

## सुबोध पाठ १७

# तात्त्विक प्रश्नोत्तर

प्र०—गति किसे कहते हैं ?

उ०—संसारी जीव मर कर जहां जाते हैं।

प्र०—गतियाँ कितनी और कौन २ सी हैं ?

उ०—चार। नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति और देवगति।

प्र०—नरकगति किसे कहते हैं ?

उ०—जो जीव अत्यन्त पाप कर्म करते हैं, वे मर कर नरक में जाते हैं उसे ही नरकगति कहते हैं।

प्र०—तिर्यञ्चगति किसे कहते हैं ?

उ०—जो जीव झूठ बोलते हैं, छल करते हैं और व्यापारादि में धोखा करते हैं, वे मर कर प्रायः पशु योनि में जाते हैं उसे ही तिर्यञ्चगति कहते हैं।

प्र०—मनुष्यगति किसे कहते हैं।

उ०—जो जीव स्वभाव से भद्र और विनयवान् दयालु तथा किसी दूसरे की ईर्षा नहीं करने वाले हैं, मर कर प्रायः मनुष्यगति में जाते हैं उसे ही मनुष्यगति कहते हैं।

प्र०—देवगति किसे कहते हैं ?

उ०—जो जीव अत्यन्त शुभ कर्म करने वाले हैं, वे मर कर देवता बन जाते हैं, उसे ही देवगति कहते हैं।

प्र०—जाति किसे कहते हैं

उ०—जिससे जीव का जन्म होवे, अर्थात् समान इन्द्रियवाले जीवों के समूह को जाति कहते हैं।

०—वे कितनी और कौन २ सी हैं ?

उ०—पाँच । एकेन्द्रिय जाति, द्वीन्द्रिय जाति, द्रय जाति, चतुरिन्द्रिय जाति और पञ्चेन्द्रिय जाति।

प्र०—एकेन्द्रिय जाति किसे कहते हैं ?

उ०—जिन जीवों को सिर्फ एक-स्पर्श-इन्द्रिय ही । जैसे मिट्टी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति के जीव।

प्र०—द्वीन्द्रिय जाति किसे कहते हैं ?

उ०—जिन जीवों के स्पर्श और जिह्वा ये दो इन्द्रियां हों। जैसे सीप, शंख, जोंक इत्यादि के जीव।

प्र०—त्रीन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उ० जिन जीवों के स्पर्श, जिह्वा और नासिका ये तीन इन्द्रियाँ हों, जैसे—जूँ, लीख, ढोरा, सुसरी कीड़ी, कुंथुवा इत्यादि।

प्र०—चतुरिन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उ०—जिन जीवों के स्पर्श, जिह्वा, नासिका और नेत्र ये चार इन्द्रियाँ हों, जैसे—मक्खी, मच्छर, भंवरा, पतंग, बिच्छू इत्यादि।

प्र०—पञ्चेन्द्रिय जीव किसे कहते हैं ?

उ०—जिन जीवों के स्पर्श, जिह्वा, नासिका, नेत्र और श्रोत्र ये पाँचों इन्द्रियां हों। जैसे—मनुष्य, पशु, पक्षी आदि तथा नारकीय और देवता के जीव।

प्र०—काय किसे कहते हैं।

उ०—शरीर को काय कहते हैं और समूह को भी काय कहते हैं।

प्र०—काय कितनी और कौन २ सी होती हैं ?

उ०—छह। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजःकाय, वायु-काय वनस्पतिकाय और त्रसकाय।

उ०—पृथ्वीकाय—जिन जीवों का शरीर पृथ्वी का
र्थात् मिट्टी के जीव। अप्काय—जिन जीवों का
पानी का है अर्थात् पानी के जीव। इसी प्रकार
काय—अग्नि के जीव, वायुकाय—हवा के जीव
पतिकाय—वृक्ष, लता, फल, फूल, शाक, भाजी आदि
ीव। त्रसकाय—जो जीव सर्दी गर्मी आदि से बचाव
े के लिए चल फिर सकते हों। जैसे द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय
रिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव।

प्र०—इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उ०—जिनके द्वारा इन्द्र अर्थात् जीव को ज्ञान होता है।

प्र०—इन्द्रियाँ कितनी और कौन २ सी हैं।

उ०—पाँच। कान, आँख, नाक, जीभ और त्वचा।

प्र०—पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ०—जीव उत्पन्न होते समय आहार आदि ग्रहण
करने की जिन शक्तियों को पूर्ण करता है उनको पर्याप्ति
कहते हैं।

प्र०—पर्याप्तियाँ कितनी और कौन २ हैं?

उ०—छह। १. आहार पर्याप्ति (गर्भ में आहार लेने
की शक्ति) २. शरीर पर्याप्ति (शरीर) ३. इन्द्रिय पर्याप्ति
(इन्द्रियाँ) ४. सासोसास पर्याप्ति (श्वास लेने व छोड़ने

उ०—पृथ्वीकाय—जिन जीवों का शरीर पृथ्वी का है अर्थात् मिट्टी के जीव। अप्काय—जिन जीवों का शरीर पानी का है अर्थात् पानी के जीव। इसी प्रकार तेजःकाय—अग्नि के जीव, वायुकाय—हवा के जीव वनसतिकाय—वृक्ष, लता, फल, फूल, शाक, भाजी आदि के जीव। त्रसकाय—जो जीव सर्दी गर्मी आदि से बचाव करने के लिए चल फिर सकते हों। जैसे द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव।

प्र०—इन्द्रिय किसे कहते हैं?

उ०—जिनके द्वारा इन्द्र अर्थात् जीव को ज्ञान होता है।

प्र०—इन्द्रियाँ कितनी और कौन २ सी हैं।

उ०—पाँच। कान, आँख, नाक, जीभ और त्वचा।

प्र०—पर्याप्ति किसे कहते हैं?

उ०—जीव उत्पन्न होते समय आहार आदि ग्रहण करने की जिन शक्तियों को पूर्ण करता है उनको पर्याप्ति कहते हैं।

प्र०—पर्याप्तियाँ कितनी और कौन २ हैं?

उ०—छह। १. आहार पर्याप्ति (गर्भ में आहार लेने की शक्ति) २. शरीर पर्याप्ति (शरीर) ३. इन्द्रिय पर्याप्ति (इन्द्रियाँ) ४. सासोसास पर्याप्ति (श्वास लेने व छोड़ने

जाता है, उसे शरीर कहते हैं।

प्र०—शरीर कितने प्रकार के हैं ?

उ०—१. औदारिक शरीर, २. वैक्रिय शरीर, ३. आहारक शरीर, ४. तैजस शरीर और ५. कार्मण शरीर।

प्र०—औदारिक शरीर का अर्थ क्या है और यह शरीर किस २ के होता है ?

उ०—जो प्रधान शरीर हो और यह शरीर मनुष्य और तीर्यंच को होता है, त्रस जीवों का औदारिक शरीर हाड़, मांस, लोही, राध इत्यादि का बना हुआ है। पांच स्थावरों का भी मूल शरीर औदारिक ही है।

प्र०—वैक्रिय शरीर किसे कहते हैं ?

उ०—जो अपनी शक्ति द्वारा नाना प्रकार की विक्रिया करे रूप बनावे, चमत्कार दिखलावे, यह शरीर नारकीय और देवता के तो होता है किन्तु मनुष्य, पशुओं को भी हो जाता है, इसकी उत्पत्ति तप और शुभ कर्मों से होती है।

प्र०—आहारक शरीर किसे कहते हैं ?

उ०—चौदह पूर्वधारी मुनि को ही यह शरीर होता है। शंकादि के होने पर केवली भगवान् के पास जाकर वह शरीर शंकाओं का निराकरण करने में सहायक होता है।

की शक्ति ) ५. भाषा पर्याप्ति (बोलने की शक्ति) ६. मनः पर्याप्ति ( मनन करने की शक्ति )

---

## सुबोध पाठ १८

## तात्त्विक प्रश्नोत्तर

प्र०—प्राण किसे कहते हैं ?

उ०—जिसके सहारे से यह जीव जीता है और वियोग होने से मृत्यु को प्राप्त होता है।

प्र०—प्राण कितने और कौन २ से हैं ?

उ०—१. श्रुतेन्द्रिय बल प्राण, २. चक्षुरिन्द्रिय बल प्राण, ३. घ्राणेन्द्रिय बल प्राण, ४. रसेन्द्रिय बलप्राण, ५. स्पर्शेन्द्रिय बल प्राण, ६. मन बल प्राण, ७. वचन बल प्राण, ८. काय बल प्राण, ९. श्वासोश्वास बल प्राण, १०. आयुष्कर्म बल प्राण।

प्र०—इन प्राणों से क्या फल मिलता है ?

उ०—आयुष्कर्म बल प्राण मूल है बाकी मनादि सब प्राण उसके कार्यसाधक हैं, यदि आयु बलप्राण न रहे तब सब प्राण निष्फल हो जाते हैं।

प्र०—शरीर किसे कहते हैं ?

उ०—जो समय २ विदीर्ण होता है, क्षीण होता

जाता है, उसे शरीर कहते हैं।

प्र०—शरीर कितने प्रकार के हैं ?

उ०—१. औदारिक शरीर, २. वैक्रिय शरीर, ३. आहारक शरीर, ४. तैजस शरीर और ५. कार्मण शरीर।

प्र०—औदारिक शरीर का अर्थ क्या है और यह शरीर किस २ के होता है ?

उ०—जो प्रधान शरीर हो और यह शरीर मनुष्य और तीर्यंच को होता है, त्रस जीवों का औदारिक शरीर हाड़, मांस, लोही, राध इत्यादि का बना हुआ है। पांच स्थावरों का भी मूल शरीर औदारिक ही है।

प्र०—वैक्रिय शरीर किसे कहते हैं ?

उ०—जो अपनी शक्ति द्वारा नाना प्रकार की वि-क्रिया करे रूप बनावे, चमत्कार दिखलावे, यह शरीर नारकीय और देवता के तो होता है किन्तु मनुष्य, पशुओं को भी हो जाता है, इसकी उत्पत्ति तप और शुभ कर्मों से होती है।

प्र०—आहारक शरीर किसे कहते हैं ?

उ०—चौदह पूर्वधारी मुनि को ही यह शरीर होता है। शंकादि के होने पर केवली भगवान् के पास जाकर वह शरीर शंकाओं का निराकरण करने में सहायक होता है।

प्र०—तैजस शरीर किसे कहते हैं ?

उ०—जो आहार किये हुए को पकाता है (हाजमा) जठराग्नि।

प्र०—कार्मण शरीर किसे कहते हैं ?

उ०—आठ कर्मों के समूह को जहाँ पर आठ ही कर्मों के परमाणु रहते हैं उस समूह को कार्मण शरीर कहते हैं।

प्र०—योग किसे कहते हैं ?

उ०—जीव नाम कर्म के योग से मनोवर्गणा, वचन-वर्गणा, कायवर्गणा इत्यादि से कर्म ग्रहण करे वा बंध करे उसे भाव योग कहते हैं, इसी भाव योग के निमित्त है। आत्म प्रदेश के परिस्फन्द को (चंचल होने को) द्रव्य योग कहते हैं।

प्र०—योग कितने हैं ?

उ०—१. सत्य मनोयोग, २. असत्य मनोयोग, ३. मिश्र मनोयोग, ४. व्यवहार मनोयोग, ५. सत्य भाषा, ६. असत्य भाषा, ७. मिश्र भाषा, ८. व्यवहार भाषा, ९. औदारिक, १०. औदारिक मिश्र, ११. वैक्रियक, १२. वैक्रियक मिश्र, १३. आहारक, १४. आहारक मिश्र, कार्माण १५।

प्र०—मनोयोग किसे कहते हैं ?

उ०—ज्ञानादि में आत्मा का उपयुक्त होना।

प्र०—उपयोग कितने हैं?

उ०—१२ पाँच ज्ञान, तीन अज्ञान, चार दर्शन। से कि १. मतिज्ञान, २. श्रुतज्ञान, ३. अवधिज्ञान, ४. मनः पर्यवज्ञान, ५. केवलज्ञान। ६. मतिअज्ञान, ७. श्रुत-अज्ञान, ८. विभंगज्ञान ९. चक्षुदर्शन, १०. अचक्षु दर्शन ११. अवधिदर्शन, १२. केवलदर्शन।

प्र०—कर्म किसे कहते हैं?

उ०—जो किए जायँ तथा आत्मा के साथ सूक्ष्म परमाणुओं का सम्बन्ध हो जाना।

प्र०—कर्म कितने प्रकार के हैं?

उ०—१. ज्ञानावरणीय, २. दर्शनावरणीय, ३. वेदनीय, ४. मोहनीय, ५. आयुष्य, ६. नाम, ७. गोत्र, ८. अन्तराय।

प्र०—ज्ञानावरणीय किसे कहते हैं?

उ०—जो ज्ञान का आवरण करता है (ढांकता) है।

प्र०—दर्शनावरण किसे कहते हैं?

उ०—जो देखने की शक्ति को ढांकता है।

प्र०—वेदनीय कर्म किसे कहते हैं?

उ०—जिस कर्म के फल से सुख वा दुःख भोगा जाता है।

प्र०—मोहनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—जिसके कारण धर्म से विमुख होकर पाप कर्म में ही निरन्तर लगा रहे अर्थात् क्रोध, मान, माया, लोभादि में ही समय व्यतीत करे।

प्र०—नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—जिस कर्म के प्रभाव से शरीर आदि के अवयव बनते हैं तथा जीव शुभ नाम और अशुभ नाम के द्वारा अपने नाम को उत्पन्न करता है।

प्र०—आयुष्य कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—जिस कर्म से जीव अपनी आयु को बांधता है तथा नरक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देवता की आयु जिस कर्म से उत्पन्न की जाती है।

प्र०—गोत्र कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—जिस कर्म से जीव ऊंच, नीच जन्मों को धारण करता है।

प्र०—अन्तराय कर्म किसे कहते हैं ?

उ०—जिस कर्म के फल से कार्यों में अनेक विघ्न उपस्थित हो जाते हैं।

प्र०—वस्तु का पास न रहना और जिसके मिलने की आशा है उसका न मिलना यह किस कर्म का फल है ?

उ०—अन्तराय कर्म का।

प्र०—अन्तराय कर्म का दूसरा नाम कौनसा है ?

उ०—विघ्न कर्म अर्थात् विघ्न ।

---

## सुबोध पाठ १६

# भगवान् महावीर

भगवान् महावीर दुनिया में सबसे बड़े दयालु महापुरुष हुये हैं । उनका जीवन बड़ा आदर्श था ।

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले विहार प्रान्त के क्षत्रिय कुण्ड (वैशाली-जिसे आज बसाढ़ कहते हैं) नगर में इस महापुरुष ने अन्तिम मानव देह धारण किया था । इनके पिता का नाम महाराज सिद्धार्थ था और माता का नाम महारानी त्रिशला ।

इस महान् आत्मा के गर्भ में आते ही त्रिशला माता ने १. श्वेत हस्ति, २. वृषभ, ३. सिंह, ४. लक्ष्मी, ५. सुगन्धित पुष्पों की माला, ६. चन्द्र, ७. सूर्य, ८. फहराती हुई ध्वजा, ९. कलश, १०. खिले हुये कमलों से भरा हुवा सरोवर, ११. समुद्र, १२. देव विमान १३. रत्नों की राशि, १४. निर्धूम अग्नि की शिखा, इन चौदह महा शुभ स्वप्नों को देखा था इससे माता-पिता को भावी बालक के विषय में बड़ा आह्लाद और आदर था, क्योंकि

रहे भाई नन्दिवर्द्धन के आग्रह से दो वर्ष तक और गृहवास में रह कर साधक के नियमों का अभ्यास करते रहे। तीर्थंकर नाम कर्म के नियमानुसार एक वर्ष तक करोड़ों अशर्फियों का दान देकर ३० वर्ष की अवस्था में श्री वर्द्धमान ने दीक्षा अंगीकार की।

साढ़े बारह वर्ष तक उग्र तप, कठिन विहार आदि साधु नियमों का यथावत् पालन करते हुये अनेकों घोर परिसहों को सहन किये। पश्चात् घनघाति कर्मों का क्षय करके केवलज्ञान और केवल दर्शन को प्राप्त किये। केवलज्ञानी होकर भगवान् वर्द्धमान (जो अपनी अनुपम वीरता के कारण वीर और महावीर भी कहलाये) २३ वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान् के पश्चात् २५० वर्षों में संघ के अन्दर जो शिथिलता आ गई थी उसे दूर कर नये चतुर्विध संघ की स्थापना की। देश में फैली हुई हिंसा को रोक कर फिर से अहिंसा धर्म का प्रचार किया। हर एक जीव को अपने समान समझने और देखने की दृष्टि दी, स्त्री और पुरुष दोनों को धर्म मार्ग का समान साधक बताया। जनता को कर्मवाद, और अनेकान्तवाद का सिद्धान्त फिर से सिखाया।

गौतम स्वामी आदि १४००० साधु, चन्दनबाला प्रमुख ३६००० साध्वियाँ, भगवान् महावीर के शिष्य

ड़े भाई नन्दिवर्द्धन के आग्रह से दो वर्ष तक और गृहवास
में रह कर साधक के नियमों का अभ्यास करते रहे।
तीर्थङ्कर नाम कर्म के नियमानुसार एक वर्ष तक करोड़ों
अशर्फियों का दान देकर ३० वर्ष की अवस्था में श्री
वर्द्धमान ने दीक्षा अंगीकार की।

साढ़े बारह वर्ष तक उग्र तप, कठिन विहार आदि
साधु नियमों का यथावत् पालन करते हुये अनेकों घोर
परिसहों को सहन किये। पश्चात् घनघाति कर्मों का क्षय
करके केवलज्ञान और केवल दर्शन को प्राप्त किये।

केवलज्ञानी होकर भगवान वर्द्धमान (जो अपनी
अनुपम वीरता के कारण वीर और महावीर भी कहलाये)
२३ वें तीर्थङ्कर श्री पार्श्वनाथ भगवान् के पश्चात् २५०
वर्षों में संघ के अन्दर जो शिथिलता आ गई थी उसे दूर
कर नये चतुर्विध संघ की स्थापना की। देश में फैली हुई
हिंसा को रोक कर फिर से अहिंसा धर्म का प्रचार किया।
प्रत्येक जीव को अपने समान समझने और देखने की
शिक्षा दी, स्त्री और पुरुष दोनों को धर्म मार्ग का समान
अधिकारी बताया। जनता को कर्मवाद, और अनेकान्तवाद
के सिद्धान्त फिर से सिखाया।

गौतम स्वामी आदि १४००० साधु, चन्दनबाला
प्रमुख ३६००० साध्वियाँ, भगवान् महावीर के शिष्य

[illegible] नन्दिवर्धन के आग्रह से दो वर्ष तक और गृहवास
[illegible] रह कर त्याग के नियमों का पालन करते रहे।
[illegible] दान करने के नियमानुसार एक वर्ष तक करोड़ों
मोहरों का दान देकर ३० वर्ष की अवस्था में श्री
भगवान ने दीक्षा अंगीकार की।

साढ़े बारह वर्ष तक उग्र तप, कठिन विहार आदि
साधु नियमों का यथावत पालन करते हुए अनेकों घोर
परिषहों को सहन किये। पश्चात् घनघाति कर्मों का क्षय
करके केवलज्ञान और केवल दर्शन को प्राप्त किये।

केवलज्ञानी होकर भगवान वर्द्धमान (जो अपनी
अनुपम वीरता के कारण वीर और महावीर भी कहलाये)
ने २३ वें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान् के पश्चात् २५०
वर्षों में संघ के अन्दर जो शिथिलता आ गई थी उसे दूर
कर नये चतुर्विध संघ की स्थापना की। देश में फैली हुई
हिंसा को रोक कर फिर से अहिंसा धर्म का प्रचार किया।
हर एक जीव को अपने समान समझने और देखने की
दृष्टि दी, स्त्री और पुरुष दोनों को धर्म मार्ग का समान
साधक बताया। जनता को कर्मवाद, और अनेकान्तवाद
का सिद्धान्त फिर से सिखाया।

गौतम स्वामी आदि १४००० साधु, चन्दनबाला
प्रमुख ३६००० साध्वियाँ, भगवान् महावीर के शिष्य

हे नन्दिवर्द्धन के आग्रह से दो वर्ष तक और गृहवास
कर साधक के नियमों का अभ्यास करते रहे।
दर नाम कर्म के नियमानुसार एक वर्ष तक करोड़ों
र्णों का दान देकर ३० वर्ष की अवस्था में श्री
ान ने दीक्षा अंगीकार की।
साढ़े बारह वर्ष तक उग्र तप, कठिन विहार आदि
नियमों का यथावत पालन करते हुये अनेकों घोर
सहों को सहन किये। पश्चात् घनघाति कर्मों का क्षय
के केवलज्ञान और केवल दर्शन को प्राप्त किये।
केवलज्ञानी होकर भगवान वर्द्धमान (जो अपनी
तुरम वीरता के कारण वीर और महावीर भी कहलाये)
२३ वें तीर्थङ्कर श्री पार्श्वनाथ भगवान् के पश्चात् २५०
पों में संघ के अन्दर जो शिथिलता आ गई थी उसे दूर
र नये चतुर्विध संघ की स्थापना की। देश में फैली हुई
हिंसा को रोक कर फिर से अहिंसा धर्म का प्रचार किया।
हर एक जीव को अपने समान समझने और देखने की
दृष्टि दी, स्त्री और पुरुष दोनों को धर्म मार्ग का समान
साधक बताया। जनता को कर्मवाद, और अनेकान्तवाद
का सिद्धान्त फिर से सिखाया।
गौतम स्वामी आदि १४००० साधु, चन्द
नमख ३६००० साध्वियाँ, भगवान् महावीर

परिवार में जाकर पूर्ण साधक व्रत को अंगीकार किये और गृहस्थ धर्म के १२ व्रतों को धारण करने वाले एक लाख गुनसठ हजार श्रावक तथा तीन लाख अठारह हजार श्राविकायें वीर संघ की सभासद बनीं। महाराज श्रेणिक, महाराज अजितशत्रु आदि बड़े २ राजा भी भगवान् महावीर के भक्त हुये।

३० वर्ष तक भव्य जनों को सदुपदेश देकर ७२ वर्ष की उम्र में भगवान् महावीर ने पावापुरी में कर्म शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त कर परमात्मपद को धारण किया।

## अभ्यास

*१—भगवान् महावीर कौन थे ?*
*२—उनकी पूरी कहानी सुनाओ !*

### सुबोध पाठ २१

## महावीर सन्देश

मनुज मात्र को तुम अपनाओ, हर [illegible] के [illegible]
असद्भाव रक्खो न किसी से, हो अरि क्यों
नहीं है [illegible]

वैर का उत्तर प्रेम है, जीने [illegible]
वैर छूटे [illegible] [illegible] जिससे, [illegible]

घृणा पाप से हो पापी से, नहीं कभी लवलेश।
भूल सुझाकर प्रेम मार्ग में करो उसे पुण्येश ॥३॥
तज एकान्त कदाग्रह, दुर्गुण, बनो उदार विशेष।
रह प्रसन्नचित्त सदा करो, तुम मनन तत्त्व उपदेश ॥४॥
जीतो-राग-द्वेष-भय-इन्द्रिय, मोह कषाय अशेष।
धरो धैर्य, समचित रहो औ, सुख दुख में सविशेष ॥५॥
'वीर' उपासक बनो सत्य के, तज मिथ्याऽभिनिवेष।
विपदाओं से मत घबराओ, धरो न कोपावेश ॥६॥
संज्ञानी-संदृष्टि बनो औ, तजो भाव संक्लेश।
सदाचार पालो दृढ़ हो कर, रहे प्रमाद न लेश ॥७॥
सादा रहन सहन भोजन हो, सादा भूषा वेष।
विश्व प्रेम जागृत कर उर में, करो कर्म निःशेष ॥८॥
हो सबका कल्याण भावना, ऐसी रहे हमेश।
दया लोकसेवा-रत चित्त हो, और न कुछ सन्देह।
यही है महावीर सन्देश, धन्य है महावीर सन्देश ॥९॥

---

## सुबोध पाठ २२

# प्रार्थना

सच बोलें सच बात विचारें, खरे काम कर जन्म सँवारें।
रक्खें देश जाति का मान, ऐसी मति होवे भगवान् ॥

॥ श्री वर्द्धमानाय नमः ॥

# सामायिक सूत्र

## णमोक्कार महामन्त्र

इस महामंत्र में पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है।

आर्यावृत्तम

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं ॥१॥

अनुष्टुपवृत्तम

एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥२॥

## गुरुवंदन का पाठ

इस पाठ से साधुजी महा० को वंदन किया किया जाता है।

तिक्खुत्तो, आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि णमंसामि सक्कारेमि, सम्माणेमि, कल्लाणं, मंगलं, देवयं, चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥३॥

## तीन तत्त्व का पाठ

देव अरिहन्त, गुरु निर्ग्रन्थ और तीर्थङ्कर प्ररूपित दयामय धर्म; इन तीन तत्त्वों का यह पाठ है।

आर्यावृत्तम्

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपण्णत्तं तत्तं, इह सम्मत्तं मए गहियं ॥४॥